वर्ष 6, अंक 10, इलाहाबाद अगस्त 2007

विश्व स्नेह समाज

राष्ट्रीय हिन्दी मासिक

कीमत 5 रुपये

खुशहाल दाम्पत्य के लिए जरुरी है आपसी सामजस्य

फर्जी डॉक्टर

चार कहानिया

पर्यावरण की रक्षा के लिए युवकों को आगे आना चाहिए

अंग्रेजी से नहीं, अंग्रेजियत से विरोध है

अध्यापिका से मुख्यमंत्री की कुर्सी तक चौथी बार पहुंची सुश्री मायावती का सफरनामा

मिसाइल क्रांति के जनक ए.पी.जे. अब्दुल कलाम

जन्म दिवस की हार्दिक बधाईयां

श्री श्याम विद्यार्थी,
वरिष्ठ निदेशक, दूरदर्शन केन्द्र, इलाहाबाद को उनके जन्म दिवस पर हार्दिक बधाईयॉ

विजय लक्ष्मी विभा
अध्यक्ष,विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान,व वरिष्ठ लेखिका को उनके जन्म दिवस पर हार्दिक बधाईया.

श्रीमती हेमा उनियाल
लेखिका एवं प्रसिद्ध शोध संस्कृति को १२ जुलाई को उनके ४४वें जन्म दिवस पर हार्दिक बधाईया।

डॉ० भगवान प्रसाद उपाध्याय, अध्यक्ष, भारतीय राष्ट्रीय पत्रकार महासंघ, के १५ जुलाई को उनके ५०वें जन्म दिवस पर हार्दिक बधाईयॉ.

कल, आज और कल भी बहुपयोगी

'विश्व स्नेह समाज' के पाठकों को विशेष तोहफा. घर बैठे प्राप्त करें वर्ष भर में १२ अंक अपनी प्रिय मासिक पत्रिका

विशेष सदस्यता योजना में भाग लीजिए, अपने नाम, पता के साथ निम्न पते पर भेजें- संपादक, 'विश्व स्नेह समाज', एल.आई.जी-१३, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद-२११०११

विश्व स्नेह समाज लोकप्रिय हिन्दी सामाजिक मासिक पत्रिका

एक प्रति:रु०५/- **विशिष्ट सदस्य**:रु० १००/- **द्विवार्षिक सदस्यता**:रु०११०/-**पाच वर्ष**-रु०२६०/- **दस वर्ष**:रू०५००/- **आजीवन सदस्य**:रु०१००१/- **संरक्षक सदस्य**:रु० २५००/-

☞ विशिष्ट सदस्यों का संचित्र संक्षिप्त परिचय एक बार प्रकाशित किया जाएगा.

☞ आजीवन सदस्यों का पूर्ण जीवन परिचय सचित्र एक बार तथा प्रत्येक वर्ष 2/3 कॉलम का विज्ञापन /संदेश निःशुल्क प्रकाशित किया जाएगा.

☞ संरक्षक सदस्यों का एक बार पूर्ण जीवन परिचय, प्रत्येक वर्ष 2/3 का विज्ञापन/संदेश निःशुल्क प्रकाशित किया जाएगा तथा उपहार स्वरुप प्रत्येक वर्ष अलग से 200रु0 तक की पुस्तकें भेंट की जाएगी.

विश्व स्नेह समाज

प्रधान सम्पादक
गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

अंक ९-१० अगस्त२००७ इलाहाबाद

बैंक से कर्ज दलाल के माध्यम से लें व भूल जायें

अपने देश में रुक-रुक कर यह एहसास होता रहता है कि इस देश में आम आदमी के लिए कानून नाम की कोई चीज नहीं हैं. ऐसी घटनाएं अक्सर सुनने को मिलती रहती है कि बैंक के गुंडो ने कार/बाईक खरीदने वालो व्यक्ति के साथ वहशियाना सुलूक किया. पहले तो उपभोक्ता यह समझता है कि मेरी गाड़ी लुट ली गई. गाड़ी लुटने के लिए मुझे मारा पीटा गया. ऐसी हरकते आम हो गयी है. सबसे अधिक आश्चर्य की बात तो यह है ऐसी हरकते तब भी हो रही है जबकि कि देश की सर्वोच्च अदालत बैंकों को यह चेतावनी दे चुकी है कि कर्ज की वसूली के लिए गुंडो का इस्तेमाल नाजायज है. बात किसी छोटी अदालत की होती तो समझ में आता कि बैंको ने कोई तवज्जो नहीं दी लेकिन सुप्रीम कोर्ट के आदेशों की भी अगर इसी तरह धज्जियां उड़ाई जाती रहीं तो फिर इस देश में क्या बचेगा? बहरहाल, जबरन कर्ज वूसली का यह तरीका सिर्फ कार, बाईक, प्रधानमंत्री रोजगार योजना आदि सरकारी योजनाओं पर नहीं, बल्कि क्रेडिट कार्ड कंपनियां भी इसी रास्तें पर चल पड़ी हैं. नई अर्थव्यवस्था ने हमें कर्ज लेकर घी पीना सिखाया है तो कर्ज न चुकाने पर, या विलंब होने पर सामंती युग से भी ज्यादा बर्बर तरीके से मार खाने को भी विवश किया है. हालांकि बैंको की इस दलील में भी दम है कि धरती पर शायद ही कोई ऐसा व्यक्ति होगा जो कर्ज न दे सकने की स्थिति में उधार की रकम या उससे खरीदा गया सामान खुद ब खुद वापस कर देगा. इसलिए बैंको के पास इस तरह के तरीके अपनाने के सिवा कोई चारा नहीं बचता.

लेकिन यह भी सत्य है कि बैंक से एक आम आदमी को लोन लेने में एक से दो साल लग जाते है वह भी जब कर्ज लेने वाला व्यक्ति सभी कागजी कार्यवाही पूरी कर चुका हो. उसके बाद भी उसे मिल जाये तो सौभाग्य ही समझें. भूख आज लगी हो और खाना एक साल बाद मिले तो लोन लेने वाला क्या करें. वह उस पैसे को जिस उद्देश्य के लिए होता है वह उद्देश्य ही समाप्त हो चुका होता है. फिर वह पैसा इधर-उधर खर्च हो जाता है. लेकिन यही काम दलाल के माध यम से करने पर एक-दो साल तो दूर एक-दो हफ्ते में, बिना जॉच पड़ताल व कागजी कार्यवाही के हो जाते हैं. लेकिन सामान्यतः यह देखा गया है कि ऐसे में एक लाख के लोन कें सरकारी योजनाओं में ६० से ६५ हजार, हाउसिंग लोन में ६५ से ७० हजार, कार/बाईक/कम्प्यूटर में ८० हजार रुपये लोन लेने वाले को मिलते हैं.

सामान्यतः यह देखा गया है कि दलाल के माध्यम से दिया जाने वाला लोन ही ज्यादा फंसता है क्योंकि कर्जदार ४० प्रतिशत राशि जो वह पाया ही नहीं उसको कहां से भरे और बिना दलाल के मिलता जल्दी मिलता नहीं.

गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

सम्पादकीय कार्यालयः

संरक्षक सदस्यः
डॉ0 तारा सिंह, मुंबई

एल.आई.जी.–93, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद
कानाफुसीः 09335155949
ई–मेलःvsnehsamaj@rediffmail.com
gokul_sneh@yahoo.com

आवश्यक सूचनाः

1.पत्रिका में प्रकाशित किसी भी रचना के लिए लेखक स्वयं जिम्मेदार होगा। पत्रिका परिवार, प्रकाशक या संपादक का इससे कोई लेना देना नहीं होगा। विवाद के संदर्भ में न्यायालय क्षेत्र इलाहाबाद होगा।
स्वामी, प्रकाशक,संपादक, मुद्रक गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी द्वारा भार्गव प्रेस बाई का बाग से मुद्रित कराकर 277/486, जेल रोड चक रघुनाथ, नैनी, इलाहाबाद से प्रकाशित किया.

अंदर पढ़िए

प्रेरक प्रसंग– 4
दिन प्रतिदिन बढ़ती फर्जी विश्वविद्यालयों की संख्या– 5
गाय और इस्लाम– 6
नर्सरियों ने बदल दिया है शहर का कलेवर–7
मिसाइल क्रांति के जनक ए.पी.जे. अब्दुल कलाम एक सफल व्यक्तित्व–8
फिल्मी दुनिया–11
व्यंग्य–12
बेटी को सुलक्षणा बहू बनाये–13
आरक्षण और सामाजिक उत्थान–15
डॉ.तारा सिंह–16
स्नेह बाल मंच–28
कविताएं– 16,19,25,26,30,31
साहित्य समाचार– 20
अध्यात्म– 21
कहानी–17, 24 लघु कथा–23,33
ज्योतिष–31 चिट्ठी आई है– 32
समीक्षा– 34

प्रेम से बढ़कर जीवन में कुछ भी आनंदमय नहीं है

प्रेम से बढ़कर जीवन में कुछ भी आनंदमय नहीं है. जिस व्यक्ति या वस्तु को हम प्रेम करते हे, वह हमें अतीव सुंदर प्रतीत होने लगती है. इस समस्त विश्व को परमात्मा का साकार स्वरूप मानकर उसे अधिक सुंदर बनाने के लिए यदि उदार वृध्दि से लोक-मंगल के कार्यो से निरत रहा जाए तो यह ईश्वर के प्रति तथा उसकी पुण्यवृत्तियों के प्रति प्रेम प्रदर्शन करने का उत्तम मार्ग होगा. इस प्रकार की हुई ईश्वर-उपासना कभी भी व्यर्थ नहीं जाती. इसकी सार्थकता के प्रमाणस्वरूप तत्काल आत्मसंतोष मिलता है. श्रेय की भावनाओं से ओत-प्रोत उदार हृदय ही स्वर्ग है. जिसे स्वर्ग अभीष्ट हो, उसे अपना अंतकरण प्रेम और सेवाधर्म से परिपूर्ण बना लेना चाहिए.

ज्योति जलाएं रखे.

अपने हृदय में उत्साह, प्रामाणिकता एवं क्रियाशीलता की ज्योति जलाएं रखे. यह स्वर्णिम-ज्योति न केवल अंतस् को ही आलोकित कर प्रकाशमय बनाए रखेगी, वरन आपके परिवार व समाज को भी उज्जवल बना देगी. आपकी ही यह स्वर्णिम प्रकाश-किरण समाज में मधुरता, रस, आकर्षण, स्नेह व्यवस्था की लय बनाए रखेगी. इससे प्रकाशित पथ ऐसा होगा जिस पर घोर अंधकार में ही अन्य व्यक्ति निर्भयता से चलते रहेंगें.

सच्चे भक्त की पुकार

पंढ़रपुर में दामोदर पंत नाम के एक सच्चे भक्त रहते थे. वे एक जमीदार की नौकरी करते थे. एक बार देश में भयंकर अकाल पड़ा. इससे किसान कर नहीं दे सके. राजा कर वसूल करने के लिए दवाब डालने लगा. दामोदर पंत से यह नहीं सहा गया. दामोदर पंत किसानों का दु:ख नहीं देख सके.

उन्होंने अपना घर बेच दिया, घर बेचकर जो रूपया मिला, उसे महसूल खाते में जमा कराने के लिए सिपाही के साथ खजाने भेजा. वे विचार करने लगे कि यदि पूरा महसूल भरने भर का धन मेरे पास होता तो मैं गरीब किसानों का सब महसूल स्वयं भर देता.

भगवान सिपाही का रुप धारण करके आए और सब किसानों का महसूल राजा के खाते में जमा करा दिया. इससे राजा बहुत प्रसन्न हुआ और सिपाही से पूछा-तुम्हे कितनी तनख्वाह मिलती है? सिपाही रुपधारी भगवान बोले-'एक लाख'. राजा ने सोचा एक लाख टका मिलते होगें. ऐसे बुद्धिमान मनुष्य के लिए यह कुछ कम नहीं है. इस वर्ष कर वसूल करने में इसने जो कौशल दिखाया है, उसके लिए दो लाख टका भी दिया जाए तो थोड़ा है.

राजा ने कहा-'आज से तुम्हें दो लाख मिलेंगे.' भगवान बोले-'मेरे लिए तो एक लाख ही पर्याप्त है.'राजा यह समझकर हँसा कि यह मूर्ख मेरी बात समझ नही रहा. भगवान चले गए. कुछ देर बाद दामोदर पंत का भेजा हुआ सिपाही थोड़े से रुपये लेकर आया. राजा ने पूछ-ताछ कर खोज की पता चला कि पहले, वाला सिपाही तो साक्षात् ईश्वर थे. भगवान अपने सच्चे भक्त की पुकार अवश्य सुनते हैं. देश के थोड़े से व्यक्ति सुखी हो और अधिकांश पीड़ित और परेशान हो तो देश का अभ्युदय नहीं कहा जा सकता. जब देश के सभी लोग सामर्थ्यवान तथा पाप से बचे हुए हों और उनमें स्थिरता भी हो तो तभी उस देश के बारे में कहा जा सकता है कि उसका अभ्युदय हुआ है. जिस देश का नैतिक स्तर समुन्नत हो, क्षणिक न हो तथा प्रभाव के साथ युक्त हो वहीं उदित राष्ट्र है. सुख के स्थायित्व के लिए यह कहा जा सकता है कि उसे धर्म से उत्पन्न और धर्मभिरक्षित होना चाहिए. अधर्म से प्राप्त सुख, अन्याय या अत्याचार का सुख, चोरी या कमजोरी से पाए हुए धन का सुख, अपने से निर्बलों, असहायों को सताकर प्राप्त किया गया सुख, न्याय-विरुद्ध अधिकार का सुख, धर्म और नीति के विरूद्ध विषय भोग का सूख कभी स्थायी नहीं होता. ऐसा सुख परिणाम में विष से भी अधिक कड़ुआ होता है. इसलिए अभ्युदय के लिए धर्म प्रमुख है. **साभारः रामपुर समाचार**

आदाब अर्ज

गुरू है गंगा ज्ञान की, करे पाप का नाश।
ब्रम्हा–विष्णु–महेश सम, काटे भीव के पाश।।

गुरू भास्कर अज्ञान तम, ज्ञान सुमंगल भोर।
शिष्य पखेरू कर्म कर, गहे सफलता कोर।।

गुरू चरणों में बैठकर, गुर जीवन के जान।
ज्ञान पाये एकाग्र मन, चंचल चित अज्ञान।।

गुरूता जिसमें वह गुरू, शत–शत करें प्रणाम।
कंकर से शंकर गढ़ें, कर्म करे निष्काम।।

ई. संजीव वर्मा 'सलिल'
सम्पादक, नर्मदा, जबलपुर

खुलासा

दिन प्रतिदिन बढती फर्जी विश्वविद्यालयों की संख्या

उत्तर प्रदेश

वुमन्स यूनिवर्सिटी प्रयाग, इलाहाबाद, वारासणिया संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी, इंडियन एजुकेशन काउंसिल ऑफ यू.पी., लखनऊ, गांधी हिन्दी विद्यापीठ, प्रयाग, इलाहाबाद, नेताजी सुभाषचंद्र बोस, यूनिवर्सिटी, (खुला विश्वविद्यालय) अछलतय, अलीगढ़, उत्तर प्रदेश विश्वविद्यालय कोशी कलम, मथुरा, महाराणा प्रताप शिक्षा निकेतन विश्वविद्यालय,प्रतापगढ़, गुरुकुल विश्वविद्यालय, वृन्दावन, दी इंस्टीट्यूट ऑफ पैरा, मेडिकल सायंस, मेरठ, एवं नेशनल यूनिवर्सिटी ऑफ इलैक्ट्रो कॉम्पलैक्स होम्योपैथी, कानपुर।

दिल्ली

दिल्ली में कामर्शियल यूनिवर्सिटी दरियागंज, यूनाइटेड नेशन यूनिवर्सिटी, ए.डी.आर. सैंट्रिक ज्युडिशियल यूनिवर्सिटी, बायो इन्फॉर्मेटिकल इंस्टीट्यूट.

अन्य राज्यों में

मैथिली विश्वविद्यालय दरभंगा, बिहार, डी.डी.बी. संस्कृत विश्वविद्यालय, पूतुर, तरीछी, तमिलनाडु, सेन्ट जॉन्स ओपन यूनिवर्सिटी, किशांतम्, केरल, राजा अरेबिक यूनिवर्सिटी नागपुर, महाराष्ट्र, केसरवानी विद्यापीठ, जबलपुर, म.प्र., बदगणवी सरकार वर्ल्ड ओपन यूनिवर्सिटी, गोकेक, बेलगाम, कर्नाटक एवं देण्ड राइटिंग यूनिवर्सिटी बेग्लौर, कर्नाटक

एक तरफ जहॉ केंन्द्र व राज्य सरकारें शिक्षा की गुणवत्तापूर्ण बनाने की राग अलाप रही है वहीं देश में २२ विश्वविद्यालय फर्जी चलाए जा रहे हैं. इसका खुलासा केंन्द्रीय विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) की रिपोर्ट में किया गया है.

फर्जी विश्वविद्यालय सबसे अधिक उत्तर प्रदेश में १० पाए गए हैं. दिलचस्प बात तो यह है कि इन विश्वविद्यालयों का नामकरण देश के महापुरुषों, राष्ट्र एवं राज्य के नाम से किया गया है. फर्जी विश्वविद्यालयों में दूसरा स्थान दिल्ली का है, जहां पांच ऐसे विश्वविद्यालय है. कर्नाटक में दो एवं अन्य राज्यों में एक-एक विश्वविद्यालय है जबकि गुजरात में एक भी फर्जी विश्वविद्यालय नहीं पाया गया.

जामनगर की 'थिकिंग टू गेदर' नामक संस्था ने फर्जी विश्वविद्यालयों की विस्तृत सूची जारी की है. इसे ध्यान में रखकर ही गुजरात के विद्यार्थी अन्य राज्यों में अध्ययन के लिए जाएं.

सबसे अधिक दिलचस्प बात तो यह है कि फर्जी विश्वविद्यालयों में बड़े पैमाने पर नामकरण गांधीजी, सुभाषचंद्र बोस, महाराणा प्रताप, सेंट जॉन्स तथा राष्ट्र एवं राज्यों के नामों के महापुरुषों के नाम से किए गए हैं. उत्तर प्रदेश में फर्जी विश्वविद्यालयों में वुमन्स यूनिवर्सिटी प्रयाग, इलाहाबाद, वारासणिया संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी, इंडियन एजुकेशन काउंसिल ऑफ यू.पी., लखनऊ, गांधी हिन्दी विद्यापीठ, प्रयाग, इलाहाबाद, नेताजी सुभाषचंद्र बोस, यूनिवर्सिटी, (खुला विश्वविद्यालय) अछलतय, अलीगढ़, उत्तर प्रदेश विश्वविद्यालय कोशी कलम, मथुरा, महाराणा प्रताप शिक्षा निकेतन विश्वविद्यालय, वृन्दावन, दी इंस्टीट्यूट ऑफ पैरा, मेडिकल सायंस, मेरठ, एवं नेशनल यूनिवर्सिटी ऑफ इलैक्ट्रो कॉम्पलैक्स होम्योपैथी, कानपुर शामिल है. इसी क्रम में दिल्ली में कामर्शियल यूनिवर्सिटी दरियागंज, यूनाइटेड नेशन यूनिवर्सिटी, ए.डी.आर. सैंट्रिक ज्युडिशियल यूनिवर्सिटी, बायो इन्फॉर्मेटिकल इंस्टीट्यूट फर्जी विश्वविद्यालय पाए गए. इसके अलावा अन्य राज्यों में मैथिली विश्वविद्यालय दरभंगा, बिहार, डी.डी.बी. संस्कृत विश्वविद्यालय, पूतुर, तरीछी, तमिलनाडु, सेन्ट जॉन्स ओपन यूनिवर्सिटी, किशांतम्, केरल, राजा अरेबिक यूनिवर्सिटी नागपुर, महाराष्ट्र, केसरवानी विद्यापीठ, जबलपुर, म.प्र., बदगणवी सरकार वर्ल्ड ओपन यूनिवर्सिटी, गोकेक, बेलगाम, कर्नाटक एवं देण्ड राइटिंग यूनिवर्सिटी बेग्लौर, कर्नाटक फर्जी पाए गए हैं.

कुछ ऐसे भी विश्वविद्यालय है जिनकी मान्यता है लेकिन उनकी अधिकतम डिग्रीया फजी है. इनमें से इलाहाबाद में ही हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, व इलाहाबाद कृषि विश्वविद्यालय, मानित, विश्वविद्यालय में बहुत सारे ऐसे कोर्स चल रहे है जिनकी कोई कानूनी मान्यता नहीं हैं. फिर भी आम जन को बेवकूफ बनाकर लगातार कोर्स संचालित किए जा रहे हैं. हिंदी साहित्य सम्मेलन तो ऐसा है जिसका कोई नियम कानून हीं नही हैं. आप केवल कागज के पन्ने को पैसें से खरीद रहे होते हैं. यह तो केवल उदाहरण है. किसी भी विश्वविद्यालय में प्रवेश लेने से पूर्व यूजीसी की साइट पर उनके मान्यता व उनके कोर्स की मान्यता का विवरण देखकर प्रवेश लें.

खुलासा

गाय और इस्लाम

पैगम्बर हजरत मोहम्मद साहब ने स्वयं कहा है "गाय का दूध शिफा (दवा) है और उसका मॉस बीमारी है."

बाबर से लेकर बहादुर शाह जफ़र तक के काल में एक भी गाय की कुर्बानी नहीं दी गई जबकि अंग्रेजी शासन काल और स्वतन्त्रता के बाद गोबध सर्वाधिक हुआ. भारत को छोड़ कर किसी भी मुस्लिम राष्ट्र में गोहत्या नहीं की जाती. यहॉ तक कि अरबियन राष्ट्रो में भी नही.

देवबन्द ने अपने एक अपीली-पत्र "अहकाम ईदुज्जुहा" के माध्यम से देश के मुसलमानों से अपील की कि अपने हिन्दू भाईयों की धार्मिक भावनाओं का खयाल रखते हुए कुर्बानी के मौके पर गौ हत्या (गाय की कुर्बानी) न करें.

डॉ. इकबाल अहमद मंसूरी
संपादक, भाग्य दर्पण

कोई भी धर्म हिंसा की इजाजत नहीं देता. जो लोग इस्लाम को क्रुर व हिंसक बताते है उन्हें या तो इस्लाम धर्म की अच्छी तरह जानकारी नहीं है या वे जान बूझ कर नफ़रत पैदा करने का षडयन्त्र करते है. गौ हत्या के लिए इस्लाम में कोई स्थान नहीं है और न ही इस्लाम धर्म इसकी स्वीकृति ही देता है. पैगम्बर हजरत मोहम्मद साहब जो कि इस्लाम धर्म के संस्थापक एवं प्रवर्तक थे, ने स्वयं कहा है- "गाय का दूध शिफा (दवा) है और उसका मॉस बीमारी है."

मुगल काल के ३०० वर्ष के शासन के दौरान बाबर से लेकर बहादुर शाह जफ़र तक के शासन काल में एक भी गाय की कुर्बानी नहीं दी गई. मुगल शासन काल में गोहत्या पूर्णतः प्रतिबन्धित था जबकि अंग्रेजी शासन काल और स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद गोबध सर्वाधिक हुआ. भारत को छोड़ कर किसी भी मुस्लिम राष्ट्रों में गोहत्या नहीं की जाती. जबकि विश्व में मुस्लिम राष्ट्रों की संख्या काफी है. यहॉ तक कि इस्लामी कानून अरब से माना जाता है परन्तु अरबियन राष्ट्रो में भी गाय की कुर्बानी नहीं दी जाती.

एक हदीस के अनुसार बिल्ली को मारने वाली एक महिला को दोजख (नर्क) मिला एवं एक प्यासे कुत्ते को पानी पिलाने वाली महिला को जन्नत (स्वर्ग) मिला. कुर्रान शरीफ की सुरा-सुरहेज के अनुसार खुदा (ईश्वर) के पास खून एवं मांस नहीं पहुँचता, बल्कि त्याग की भावना पहुँचती है. यदि कुर्बानी के इतिहास को देखा जाय तो खुदा ने इस्माईल से अपनी सबसे अजीज (प्रिय) वस्तु को खुदा की राह में कुर्बान करने को कहा था और इस्माईल ने अपने जिगरी बेटे इब्राहिम को खुदा की राह में कुर्बानी देने का संकल्प किया था. उस समय भी खुदा ने चाकू के नीचे दुम्मा रखा था गाय, घोड़ा, ऊँट या बकरा नहीं. आज कोई भी ऐसा खुदा (ईश्वर) भक्त नहीं है जो अपने बेटे की कुर्बानी देने को तैयार हो. फिर बेवश जानवरों की कुर्बानी ही क्यों दी जाती? शेर या हाथी की कुर्बानी क्यों नहीं होती.

आयुर्वेद एवं यूनानी इलाजों में अनेक मर्जो के लिए गोमूत्र का सेवन का विधान है. भारत में गाय की कुर्बानी एवं हत्या का सिलसिला फिरंगी शासन काल से शुरु हुआ. इसके पीछे भी अंग्रेजों की वहीं पुरानी कूटनीति थी कि "फूट डालो और राज करो" क्योंकि अंग्रेज जानते थे कि जब तक किसी देश के नागरिकों में एकता रहेगी तब तक उनका शासन कायम नहीं हो सकता. यहॉ एक उदाहरण देना उचित होगा-एक जंगल में चार बैल और एक शेर रहते थे. बैलों में एकता थी. शेर उन्हें मारना चाहता था परन्तु उनकी एकता के कारण वह उन्हें मार नहीं पाता था. एक दिन शेर ने भी अंग्रेजों की नीति का अनुसरण किया. शेर ने एक दिन दो बैलों को अलग बुलाकर कहा कि उन दोनों की अपेक्षा तुम लोग काफी दुबले पतले व कमजोर हो. कारण की अच्छी हरी घास वे दोनों खा जाते है, तुम लोग अपना हिस्सा अलग कर लो. यही बात दूसरे दोनों बैलों से कहा. फिर क्या था चारों में भ्रम पैदा हो गया और चारागाह को दो हिस्सों में बॉट दिया गया. जब शेर उन्हें मारने गया तो देखा कि दो-दो बैल भी उससे तगड़े पड़ रहे है. फिर उसने वहीं पुरानी बात चारों से अलग-अलग बुला कर कहा और चारागाह को चार हिस्सों में बांटते हुए कहा कि तुम चारों एक दूसरे से कोई सम्बन्ध न रखना और अपनी सीमा से बाहर कुछ भी हो मत जाना. उसके बाद पहले दिन शेर ने एक बैल पर आक्रमण किया तो तीनों बैंलो ने कहा अच्छा हुआ यह बहुत नालायक था. इसी तरह शेर ने चारों को मार डाला. ठीक इसी तरह अंग्रेजों ने भारतीयों के

अन्दर नफरत और घृणा का भाव भर कर उन्हें एक दूसरे से अलग करना शुरू किया. अंग्रेजी सिपाहियों का पेट भरने के लिए फिरंगी हुकमरानों ने गाय-बैल मुसलमानों, से कटवाना शुरु किया और कुप्रचार किया कि "मुसलमान गाय काटते हैं" तथा सदियों से एक साथ सौहार्दपूर्ण तरीके से रह रहे हिन्दू मुसलमानों को आपस में लड़ाया यही कार्य आज भी राजनीति के धुरन्धर कुछ कुर्सी हथियाने के लिए कर रहे हैं. मज़हब व धर्म के नाम पर लोगों के दिलों के बीच नफरत की दीवार खड़ी कर सत्ता के शिखर पर पहुँचना चाहते हैं. जब कि सभी धर्म जीव दया की शिक्षा देते है. कोई भी धर्म हिंसा की शिक्षा नहीं देता.

स्वामी दयानन्द सरस्वती के प्रयास से "गोकृष्णादि दक्षिणी सभा" का गठन किया गया जिसमें हिन्दू एवं मुसलमान दोनों थे और दोनों ने मिल कर गोरक्षा की. आराम बाग, नई दिल्ली में मो० अमजद कुरैशी जो की स्वयं कसाई वंश में जन्में थे "रहम-ए-दिल" संस्था की स्थापना कर गाय एवं अन्य पशुओं को सरंक्षण दिया. कट्टरपंथियों ने जोरदार उनका विरोध किया. यहाँ तक की उन्हें मारने के उद्देश्य से कई बार उन पर जान लेवा हमले भी किये गये परन्तु वे बच गये. हाल ही में इस पशु प्रेमी का इंतकाल हो गया. मुसलमानों की देश की प्रसिद्ध शिक्षण संस्था दारुल उलूम, देवबन्द ने ३० दिसम्बर २००६ को अपने एक अपीली -पत्र "अहकाम ईदुज्जुहा" के माध्यम से देश के मुसलमानों से अपील की कि अपने हिन्दू भाईयों की धार्मिक भावनाओं का खयाल रखते हुए कुर्बानी के मौके पर गौ हत्या (गाय की कुर्बानी) न करें. इसी प्रकार मद्रास उच्च न्यायालय ने २८ दिसम्बर ०६ के ऊँट को कुर्बानी और सर्वोच्च न्यायालय द्वारा गौहत्या को गैर कानूनी करार दिया गया है.

सारांश यह है कि इस्लाम में हत्या व हिंसा का कोई स्थान नहीं है, जो लोग इसका दुष्प्रचार करते है वे या तो अज्ञानी हैं या निजी स्वार्थो हित में लोगों को गुमराह करते है. इस्लाम आपसी भाई चारा, प्रेम व सद्भाव की प्रेरणा देता है.

पर्यावरण

नर्सरियों ने बदल दिया है शहर का कलेवर

ग्रीन सिटी, इलाहाबाद में इन दिनों नयी कवायद जोरों पर है. वैसे भी यह शहर हरियाली का शहर है ही लेकिन इन दिनों रोड साइड नर्सरियों के बढ़ते कलवेर ने शहर का नक्शा ही बदल दिया है. अब हर घर में गमलों, फुलवारियों का क्रेज बढ़ गया है. इस दिशा में सरकारी प्रयास तो लाभप्रद रहे ही हैं लेकिन रोड साइड नर्सरियों ने इस दिशा में क्रांति सी ला दी है. पेड़ पौधा समाचार के सम्पादक श्री अरुण कुमार अग्रवाल कहते है कि रोड साइड नर्सरियों के आने से लोगों न केवल फूल पौधे प्राप्त होने में सुविधा हुई है बल्कि इन नर्सरियों ने लोगों को वातावरण सही रखने में फुल पौधों की उपयोगिता पर भी ध्यान देने पर मजबूर कर दिया है. वे कहते है कि पेड़ पौधों को लगाने से वातावरण बेहतर होता है. आप खुद ही देखिये कि जहां पेड़ पौधे लगे हो वहां एक शांति सी होती है. इस लिहाज से रोड साइड नर्सरियों ने शहर का वातावरण सही रखने में खासी सहायता की है. श्री अग्रवाल जो इलाहाबाद नर्सरी मैंन एसोसिएशन के संरक्षक भी है, बताते हैं कि इलाहाबाद में नर्सरियां और बढ़े और लोग पेड़ पौधों के प्रति जागरुक हो इसके लिए सभी नर्सरियों ने मिलकर एक एसोसिएशन बनायी है. जिसके तहत सभी नर्सरियां मिलकर समय-समय पर कार्यक्रम आयोजित करती है जिसमें सभी नर्सरी वाले संयुक्त रुप से पेड़ पौधे देते है.

वह बतातें है कि इन सब प्रयासों से लोगों में जागरुकता हुई है, और पेड़ पौधो के प्रति लोगों की रूचि बढ़ रही है. इस सन्दर्भ में एक खास बात यह भी है कि प्राइवेट नर्सरियों ने लोगों को बेहतर सुविधा प्रदान की है. प्राइवेट नर्सरियों में लोगों को हर तरह की जानकारी देने के लिए विनम्र और अनुभवी कर्मचारी मौजूद रहते है. जिससे लोगों को पेड़ पौधे खरीदने और रख-रखाव की जानकारी प्राप्त करने में सुविधा होती है. श्री अग्रवाल बताते है कि इस दिशा में अन्य प्रयास भी चल रहे है जिसे पर्यावरण के प्रति लोगों की जागरूकता बढ़ रही है. इधर पर्यावरण संरक्षण समिति द्वारा बागवानी की जानकारी के लिए कार्यक्रम चलाया गया है.

श्री अग्रवाल स्वयं बागवानी के शौकीन है, और पर्यावरण की बेहतरी के लिए आप अर्से से पेड़ पौधा समाचार के नाम से समाचार पत्र निकालकर लोगों को बागवानी के लिए जागरुक कर रहे है.

साहित्य भारतीय
संपादकः श्री राजेन्द्र शेखावत
पाल हवेली, ख्याली झुझनू-३३१०२६, राजस्थान

सुरक्षा और आप
प्र.संपादकः श्री डी.एन.गौतम
५७, द्वितीय तल, लिंक रोड नं०२,कोलार रोड, भोपाल- ४६२००३,म.प्र.

नालदां दर्पण मासिक
सपादक डॉ. स्वर्ण किरण
सोहसराय, नालंदा-८०३११८, बिहार

सफल व्यक्तित्व

मिसाइल क्रांति के जनक ए.पी.जे. अब्दुल कलाम

विज्ञानरत्न लक्ष्मण प्रसाद एवं विनोद कुमार मिश्र

भारतीय मिसाइलों के जनक माने जाने वाले ए.पी.जे. अब्दुल कलाम का जन्म तत्कालीन मद्रास राज्य(अब तमिलनाडु) के पवित्र शहर रामेश्वर में १५ अक्टूबर १९३१ में हुआ था. उनके पिता जैनुलब्दीन के पास न तो ज्यादा औपचारिक शिक्षा थी और न ही अधिक धन.

अब्दुल कलाम के कई भाई-बहन थे. उनका बचपन अत्यंत सुरक्षित वातावरण में बीता. रामेश्वरम् स्थित प्रसिद्ध शिव मंदिर में उनका नियमित आना-जाना था और वहां के पुजारी उनके पिता के अच्छे मित्र थे. बालक अब्दुल कलाम को अकसर हिंदू और मुस्लिम धर्म-चर्चा में भाग लेने का अवसर मिलता था.

अब्दुल कलाम ने यथासमय प्रारंभिक शिक्षा ग्रहण करना प्रारंभ किया. हाईस्कूल की पढ़ाई अब्दुल कलाम ने रामनाथपुरम् स्थित श्वार्ट्ज हाईस्कूल से की. उनके शिक्षक इयादुराई सोलोमन उनसे खासे प्रभावित थे. एक बार गणित के शिक्षक ने उनकी बेंत से जमकर पिटाई भी की पर जब उन्होंने पूरे अंक प्राप्त किए तो वे शिक्षक भी उनसे अत्यंत प्रभावित हुए.

हाईस्कूल की परीक्षा सफलतापूर्वक उत्तीर्ण करने के बाद अब्दुल कलाम का आत्मविश्वास बढ़ चुका था. अब वे तिरूचिरापल्ली स्थित सेंट जोसेफ कॉलेज में पढ़ने गए. पढ़ाई के बीच जब समय मिलता था तो अब्दुल कलाम अपने भाई की परचून की दूकान में भी हाथ बटाया करते थे. उधर कॉलेज में उन्होंने अंग्रेजी का अच्छा ज्ञान प्राप्त कर लिया था. उनका एक मित्र कट्टर तमिल ब्राहमण परिवार का था और दूसरा ईसाई परिवार का. सामान्य पढ़ाई के अलावा उन्होंने टाल्स्टॉय, स्कॉट, हार्डी जैसे लेखकों की रचनाएं भी पढ़ी. यहीं पर उन्होंने भौतिकशास्त्र

के अध्ययन के दौरान परमाणु-संरचना, रेडियो-धर्मिता आदि का अध्ययन किया जो उनके भावी जीवन का आधार बना.

एक ओर वे विज्ञान का गहन अध्यन कर रहे थे और दूसरी ओर, उन्हें उन काल्पनिक कहानियों को पढ़ने में भी आनंद आता था, जिनमें अंतरिक्ष, चंद्रमा आदि की यात्रा का वर्णन होता था. ज्योतिष में भी खासी रूचि थी.

बी.एस.सी. की डिग्री लेने के बाद अब्दुल कलाम ने मद्रास इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी में इंजीनियरिंग की पढ़ाई के लिए प्रवेश लिया. घर की माली हालत इतनी खस्ता थी कि प्रारंभ में जब एक हजार रुपयों की आवश्यकता पड़ी तो उनकी बहन को अपनी सोने की चुड़िया और जंजीर गिरवी रखनी पड़ी. इससे अब्दुल कलाम का संकल्प और बढ़ गया. पहले साल की पढ़ाई पूरी करने के बाद उन्होंने एयरोनॉटिकल इंजीनियरिंग को अपना विषय चुना.

इंजीनियरिंग की पढ़ाई के दौरान उन्हें अनेक विशिष्ट प्रोफेसरों से मिलने और साथ काम करने का अवसर मिला. पढ़ाई पूरी करने के बाद वे हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड बंगलौर में बतौर प्रशिक्षु गए. वहॉ उन्होंने हवाई जहाज के इंजन के ओवरहालिंग का काम सीखा.

प्रशिक्षण समाप्त होने पर उनके पास दो विकल्प थे-या तो वे वायुसेना में भर्ती हों या रक्षा मंत्रालय की प्रयोगशालाओं में जाएं. युवक अब्दुल कलाम ने दोनों ही जगह आवेदन किया और रेल का टिकट लेकर चल दिए सुदूर उत्तर में देहरादून की ओर रास्तें में उन्हें पूरे देश के मनोरम दृश्य देखने को मिला.

पहले दिल्ली में उन्होंने रक्षा मंत्रालय में साक्षात्कार दिया. इसमें अनेक सवालों का सफलतापूर्वक उत्तर देने के पश्चात वे देहरादून पहुंचे. यहां भी उन्होंने सवालों का दृढ़तापूर्वक जवाब दिया, पर उनका स्थान २५ प्रत्याशियों के दल में नवां था जबकि ८ अधिकारी ही लिए जाने थे. व्यथित अब्दुल कलाम ऋषिकेश पहुंचे जहां उन्होंने पवित्र गंगा नदी में स्नान किया और साधुओं के साथ कुछ समय बिताया. जहां वे साधुओं से प्रभावित हुए, वहीं साधुओं को भी उनके मुस्लिम होने पर कोई एतराज नहीं था. एक साधु ने उन्हें काफी सांत्वना दी.

अब वे वापस लौटकर दिल्ली आए और उन्होंने अपने साक्षात्कार के परिणाम

की जानकारी मांगी. बदले में उन्हें नियुक्ति-पत्र दे दिया गया. उन्होंने २५० रूपये प्रतिमाह वेतन पर वरिष्ठ वैज्ञानिक सहायक के रूप में १९५८ से काम करना प्रारंभ कर दिया. हवाई जहाज की मरम्मत के बारे में अधिक जानकारी हासिल करने के लिए उन्हें कानपुर भी भेजा गया.

विभिन्न छोटी-बड़ी परियोजनाओं पर काम करने के बाद उन्हें बंगलौर भेजा गया जहां एयरोनॉटिकल डेवलपमेंट एस्टेब्लिशमेंट की स्थापना की गई थी. उस समय वी.के. कृष्ण मेनन भारत के रक्षा मंत्री थे. जब वे उनके संस्थान में आए तो उन्होंने नए बन रहे जहाज 'नंदी' की खुद सवारी करके देखी. उन्होंने दोबारा इसकी सवारी करने का आश्वासन भी दिया. उत्साहित कलाम और उनके साथी इस जहाज को अधिक प्रभावी बनाने में जुटे रहे, पर राजनीतिक कारणों से वी.के. कृष्ण मेनन को इस्तीफा देना पड़ा. नए मंत्री महोदय ने जहाज आयात करने का फैसला किया. इससे कलाम को गहरा आघात लगा.

तभी उन्हें रॉकेट इंजीनियर के पद पर नियुक्ति के लिए साक्षात्कार हेतु पत्र मिला. अंतरिक्ष शोध के लिए हुए इस साक्षात्कार में प्रश्नकर्ता डॉ. विक्रम साराभाई, प्रो. एम.जी.के.मेनन और श्री सर्राफ जैसे विद्वान लोग थे. कलाम ने साक्षात्कार पूरी निश्चितता से दिया और प्रभावित बोर्ड सदस्यों ने उन्हें एक-दो दिन रूकने की सलाह दी.

अगले ही दिन उन्हें नियुक्ति की सूचना मिल गई. अब उन्हें अपना सपना साकार होता नजर आने लगा. १९६२ के उत्तरार्थ में केरल स्थित तिरूअनंतपुरम के पास थुंबा में रॉकेट छोड़ने के लिए स्थल तैयार करने की तैयारी प्रारंभ हो गई. अब्दुल कलाम ने इस प्रक्षेपण-स्थल के निर्माण-दल के सदस्य के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई. उनके काम से प्रभावित होकर सरकार ने उन्हें अमेरिका स्थित नासा में ६ महीने के प्रशिक्षण कार्यक्रम में शरीक होने के लिए भेजा.

उन्होंने वर्जीनिया स्थित नासा केन्द्र में काम करना प्रारंभ कर दिया. यहां उन्होंने उच्च्य एयरोस्पेस तकनीक का अध्ययन किया. इसके बाद वे मेरीलैंड गए जहां उन्होंने उपग्रह-प्रणाली का गहन अध्ययन किया. अंतिम चरण में वे वॉलप द्वीप स्थित केंद्र में गए.

अब्दुल कलाम के नासा से वापस आने के पश्चात २१ नवंबर १९६९ को पहला भारतीय रॉकेट छोड़ा गया. यह रॉकेट नासा में ही तैयार किया गया था. इस रॉकेट को लाने और प्रक्षेपण-स्थल पर स्थित करने में काफी मशक्कत करनी पड़ी थी.

इस घटना से प्रभावित प्रो. साराभाई ने अब्दुल कलाम तथा उनके युवा साथियों से आगे की योजना के बारे में मशविरा किया. नए वैज्ञानिक उनसे काफी प्रभावित थे और उनके निर्देशों का बिजली की गति से पालन करते थे.

अब्दुल कलाम भारतीय रॉकेट युग के प्रारंभिक दौर की सफलता का श्रेय पंडित जवाहरलाल नेहरू और प्रो. विक्रम साराभाई को देते है, जिन्होंने अदूरदर्शी आलोचकों की परवाह न करके इस कार्यक्रम को आगे बढ़ाया. दरअसल साराभाई जो फैसले लेते, वे अंतरिक्ष वैज्ञानिकों के लिए जीवन के मिशन बन जाते थे. उन्होंने अब्दुल कलाम को एक विशेष कार्य सौंपा जिसमें उन्हें देश की सभी प्रयोगशालाओं से सहायता लेनी थी. इसके अलावा उन्हें अमेरिकी, रूसी, फ्रांसीसी, जर्मन और जापानी वैज्ञानिकों से भी संपर्क करना था.

काम बढ़ता गया. पहला रोहिणी-७५ रॉकेट २० नवंबर १९६७ को छोड़ा गया. इसकी सफलता से प्रभावित प्रो. साराभाई ने उन्हें सैनिक हवाई जहाज के लिए रॉकेट प्रणाली विकसित करने का दायित्व सौंपा. इस काम के लिए रूस की सहायता ली जा रही थी. इसी बीच प्रो. साराभाई ने अंतरिक्ष कार्यक्रम घोषित किया. दूसरी ओर, रक्षा मंत्रालय ने मिसाइल कार्यक्रम तैयार किया.

इन दोनों में अपनी भूमिका पाकर अब्दुल कलाम का हैसला बढ़ गया. सेना की ओर से ग्रुप कैप्टेन नारायणन काम कर रहे थे. १९६२ और १९६५ के युद्धों में भी यह सबक मिला था कि देश का अब रक्षा-प्रणाली में आत्मनिर्भर होना आवश्यक है. दोनों में खूब जमती थी.

अब अब्दुल कलाम में नेतृत्व के गुण भी विकसित हो चुके थे. वे न सिर्फ खुद काम करते थे, वरन अपने साथी कर्मचारियों से भी अच्छा काम ले लेते थे.

काफी परिश्रम के बाद भी एस.एल. वी. परियोजना स्थगित कर दी गई. अब्दुल कलाम को एक बार फिर आघात का सामना करना पड़ा. इससे भी बड़ा आघात उन्हें तब लगा जब १९७१ से ३० दिसंबर को प्रो. साराभाई का निधन हो गया.

अब्दुल कलाम का दिन प्रातः टहलने से प्रारंभ होता था. वे अपनी दो किमी. की यात्रा में पूरे दिन का कार्यक्रम तय कर लेते थे. आफिस जाकर वे दस मिनट के अंदर सारे कागजात देख लेते थे और प्राथमिकता के आधार पर अलग-अलग कर लेते थे. उन्हें डिजाइन के दौरान सैकड़ों असेंबली और सब-असेंबली का इंतजार करना होता था. एक-एक परियोजना में लाखों पुर्जे खरीदने होते थे. इसके लिए सैकड़ों

उद्योगों से संपर्क करना होता था. वर्षो चलने वाली परियोजना के एक-एक स्तर के लिए लक्ष्य निर्धारित करना होता था.

१९७२ में रक्षा अनुसंधान विभाग ने जमीन से हवा में मार करने वाली स्वदेशी मिसाइल 'डेविल' विकसित करने का निर्णय लिया गया. इस परियोजना के लिए एयर कमोडोर नारायणन तथा अब्दुल कलाम को कमान सौपी गई. व्यस्तता के कारण कलाम की भागदीदारी इस परियोजना में कम होती गई, पर परियोजना आगे बढ़ती चली गई.

१९७५ में इसरो (आई.एस.आर.ओ.) एक पूर्ण सरकारी संस्था बन गई और इसकी काउंसिल में अंतरिक्ष विभाग के वरिष्ठ अधिकारी रखे गये. इसी दौरान अब्दुल कलाम का टी.एन. शेषन से संपर्क हुआ जो अंतरिक्ष विभाग में सचिव थे.

१९७५ से १९७८ तक भारत ने अंतरिक्ष में अपने कदम तेजी से फैलाए. लेकिन इसी दौरान उनके प्रेरक बहनोई जलालुद्दीन का निधन हो गया तथा उनके पिता भी चल बसे. अपनी मां के साथ रहने की इच्छा के विपरीत उन्हें थुंबा वापस जाना पड़ा.

कलाम के वैज्ञानिक जीवन में असफलताएं भी आई लेकिन वे उन्हें सुधारते हुए आगे बढ़ते चले गए. एस.एल.बी ३ की उड़ान असफल हुई तो अखबारों में कार्टून छपे लेकिन जुलाई १९८० को श्री हरिकोटा से सफल उड़ान भरी. इसके बाद रोहिणी उपग्रह पृथ्वी का चक्कर लगाने लगा. ३१ मई १९८१ को एस.एल.वी ने अगली उड़ान भरी. डॉ. राजा रामण्णा ने अब्दुल कलाम को रक्षा अनुसंधान में आने का निमंत्रण दिया और गाइडेड मिसाइल तैयार करने का दायित्व सौपा. १९८१ में कलाम को पद्मभूषण से नवाजा गया. फरवरी १९८२ में वे डी.आर.डी.एल के निदेशक नियुक्त हुए. यहाँ आने के बाद वे तेजी से कार्य करने में जुट गए. उन्होंने साउथ ब्लॉक में रक्षामंत्री, सेना के तीनों प्रमुखों आदि के सामने पूरी परियोजना को रखा. उपस्थित लोगों ने अनेक सवाल किए और कलाम ने सभी के उत्तर दिए. रक्षा मंत्री ने उन्हें अगले दिन मिलने के लिए कहा. सारी रात कलाम और उनके साथी तैयारी करते रहे. सवेरे नाश्ते के समय उन्हें याद आया कि आज शाम को तो उनकी भतीजी की शादी है. उन्हें दुःख हुआ, पर फिर वे सब कुछ भूलकर परियोजना की तैयारी में जूट गए. परियोजना देखकर रक्षा मंत्री वेंकटरामन प्रसन्न हुए. उन्होंने इसे मंजूरी दे दी. प्रसन्न डॉ. अरूणाचलम् ने वायुसेना के हेलीकॉप्टर, से कलाम के जाने की व्यवस्था की और वे अपनी भतीजी की शादी में पहुंच गए.

अब्दुल कलाम ने अपनी कल्पना की मिसाइल का नाम 'अग्नि रखा और यह २७ जुलाई १९८३ को औपचारिक रूप से कार्य प्रारंभ हुआ. २६ जून १९८४ को पुरानी डेविल मिसाइल के परिवर्तित रूप को छोड़ा गया. अब इंदिरा गांधी खुद इस कार्यक्रम में रूचि लेने लगी थी. तब तक टी.एन.शेषन रक्षा सचिव होकर आ गए थे. वे अब्दुल कलाम को पूरे नाम अबुल पाकिर जैनुलब्दीन अब्दुल कलाम पुकारते थे.

१९९० में गणतंत्र दिवस के अवसर पर कलाम को पद्मविभूषण से नवाजा गया. अपनी खुशी को इजहार करने का नया तरीका उन्होंने ईजाद किया और इसके तहत शीघ्र ही 'नाग' ने उड़ान भरी. १५ अक्टूबर १९९१ को अब्दुल कलाम ६० वर्ष के हो गए. वे अवकाश लेना चाहते थे, पर सरकार ने उनकी प्रतिभा के मद्देनजर विश्राम नहीं दिया. उन्होंने रक्षा मंत्री के वैज्ञानिक सलाहकार तथा रक्षा अनुसंधान औश्र विकास विभाग में सचिव की हैसियत से काम किया. वे टेक्नोलॉजी इनफॉमेशन फोरकास्टिंग तथा एसेसमेंट के अध्यक्ष भी रहे, जिसने टेक्नोलॉजी विजन-२०२० नामक महत्वपूर्ण दस्तावेज तैयार किया. डॉ. कलाम ने निजी उद्योग जगत को भी महत्वपूर्ण अनुसंधान सलाह दिए. १९९८ में परमाणु परीक्षण के समय पुनः सुर्खियों में आए. सफलता का श्रेय कलाम के नेतृत्व को दिया गया. भारत सरकार ने उन्हें १९९७ में 'भारत रत्न' से अलंकृत किया. उन्हें केन्द्रीय सरकार के कैबिनेट मंत्री के समकक्ष पद मुख्य वैज्ञानिक सलाहकार के पद को भी सुशोभित किया. ७० वर्ष की अवस्था में उन्हें अवकाश दिया गया. कलाम साहब की यह योजना थी कि वे सरकारी काम से मुक्ति पाकर, भारत की नई पीढ़ी से बातचीत करके उनका वैज्ञानिक रूझान बढाएंगे. वे चेन्नई एक विश्वविद्यालय में पढ़ाना प्रारंभ कर दिया. पर उनके नसीब में आराम कहा! सन् २००२ में राष्ट्रपति चुनाव में सर्वसम्मत से भारी बहुमत से राष्ट्रपति चुने गए. भारत के इतिहास में वे पहले वैज्ञानिक राष्ट्रपति बने.

अब तक उन्हें २५ विश्वविद्यालयों/शिक्षण-संस्थान उन्हें डी.एस.सी. की मानद उपाधि से विभूषित कर चुके है. उन्हें नेशनल डिजाइन पुरस्कार, डॉ. बीरेन रॉय स्पेस पुरस्कार, ओम प्रकाश भसीन पुरस्कार, नेशनल नेहरू पुरस्कार आदि से सम्मानित किया जा चुका है. १९९९ में वाई. नायडुम्मा स्मृति पदक मिला और उसी वर्ष जी.एम.मोदी विज्ञान पुरस्कार एच.

एड्स पर आधारित धारावाहिक 'प्रेरणा' का प्रसारण दूरदर्शन से शीघ्र

टी.वी. धारावाहिक प्रेरणा की शूटिंग इलाहाबाद के विभिन्न स्थानों पर होने के बाद पूरी हो गई. धारावाहिक का प्रसारण शीघ्र ही दूरदर्शन से होगा. एड्स पर आधारित इस धारावाहिक में मानवीय रिश्तों की भावनाओं को उजागर किया गया है. इस धारावाहिक के द्वारा एड्स, एच.आई.वी के प्रति समाज में व्याप्त भ्रांतियों को समाप्त करने का भी प्रयास किया गया है. एड्स छूने अथवा साथ उठने बैठने से नहीं फैलता, ऐसा बताने का प्रेरणा में प्रयास किया गया है. धारावाहिक के नायक है तनवीर जैदी जो पूर्व में हिन्दी फिल्म 'बेलगाम' एवं शक्ति चैनल पर प्रसारित हो रहे धारावाहिक 'जेल में है जिन्दगी' से लोकप्रिय है. इस धारावाहिक में टी.वी. कलाकार अली असगर, एहसान खान, अनमोल खरे एवं अंजली राना भी मुख्य भूमिकॉए निभाते नजर आयेंगे.

साथ ही अन्य कलाकार है नवोनिता चक्रवर्ती, हरिओम पारासर, जीनत जहाँ, तालिम मेंहदी, नेहा गुप्ता, गीता, अनिल श्रीवास्तव, सुनीता सिंह, जन्नत एवं पीकू आदि. इस धारावाहिक के निर्माता राजेश श्रीवास्तव एवं शुभम मिश्रा है. निर्देशन किया है अरविंद सिंह ने, कैमरा संभाला है कमल ने और शीर्षक गीत गाया है विनोद राठौर ने.

के. फिरोडया पुरस्कार भी मिला. १९९७ में राष्ट्रीय एकीकरण के लिए इंदिरा गांधी पुरस्कार तथा १९९८ में वीर सावरकर पुरस्कार भी मिला.

वे अनेक संस्थाओं से संबंध रहे है. वे एस्ट्रोनॉटिकल सोसायटी के उपाध्यक्ष, नेशनल इंजीनियरिंग अकादमी तथा नेशनल मेडिकल साइंसेज अकादमी के भी फेलो है. इंस्टीट्यूट ऑफ इलेक्ट्रानिक्स एंड टेलीकम्यूनिकेशन इंजीनियर्स ने भी उन्हें मानद फेलो नियुक्त किया.

सादा अविवाहित जीवन बिताने वाले अब्दुल कलाम ने देश के सामान्य नागरिको में एक नए उत्साह का संचार किया है. आशा है हमारे राजनेता वोट की राजनीति से ऊपर उठकर दूबारा चयन करने का प्रयास करेंगे.

++++++++++++++++++++++

अगर किसी को कुछ दे सकते हो, तो उसके ओठों पर मुस्कराहट दे दों. दाऊजी

With Complement From : Reco. By. U.P.Government

Kishore Girls Inter College & Convent School

Nursery to Class XIIth

- Education by experienced Teachers
- Good Atomosphere For Education
- Limited Students in every Class

Manager **V.N.Sahu**

Principal Ms Savita Singh Bhadhaudaryia

Cont.: 82/102, Meera Patti, T.P. Nagar, G.T. Road, Allahabad

स्नेहांगन कला केन्द्र

सिलाई, कढ़ाई, पेंटिग (सभी प्रकार की), फ्लॉवर मेंकिग, डॉल मेंकिग, ज्वेलरी मेंकिग, टवॉयज मेंकिग, इग्लिश स्पोकेन, कम्प्यूटर के सभी कोर्सेस सीखने हेतु सम्पर्क करें.

एल.आई.जी.-९३/२९८, सेक्टर-२,
नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा,
इलाहाबाद

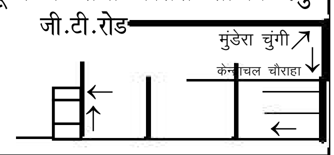

व्यंग्य

हिन्दी तुझे सलाम

भवानी शंकर 'तोसिक',
अजमेर, राजस्थान

भारत तीज त्यौहारों का देश है. लाचारों और मजबूरों का देश है. उत्सवों तथा पर्वो का देश है. यहॉ का प्रत्येक दिन किसी न किसी उत्सव को लेकर उदय होता है. कुछ उत्सवों के हम प्रभारी हैं. हम उन उत्सवों के आभारी हैं जिनकी वजह से हमारी आजीविका रेंगती हुई आगे बढ़ती है. उत्सवों को मनाना इसलिए जरूरी है क्योंकि वे रुठे हुए है. हमारे मनाने की वजह से ही वे एक निश्चित तिथि को आते हैं. हमें पूरा विश्वास होता है कि वे निश्चित तिथि को अवश्य आयेंगे. हमारे विश्वास को बिना तोड़े-फोड़े वे समय से आते है. वे जानते हैं कि हम उन्हें मना लेंगें. हम भी उनके विश्वास पर खरे उतरते है.हम उन्हें मनाते है और वे मान जाते है. मनाने के बाद एक वर्ष के लिए वे फिर रुठ जाते हैं. रुठने और मनाने का यह क्रम तीन सौ सवा पैंसठ दिन तक चलता रहता है.

जयन्तियों की तुलना में दिवस मनाना आसान हैं. इसमें ज्यादा खून पसीना बहाने की जरुरत नहीं है. रक्तदान दिवस पर थोड़ा खून निकाल लो और मजदूर दिवस पर किसी अबला के सिर पर मैले और माटी की तगारी रखकर छायाचित्र उतार लो. पत्रिकाओं और अखबारों की यात्रा करवा दो. यही है इन दिवसों की सार्थकता.

पिछले दिनों हिन्दी दिवस पर मुझे अध यक्षता करने का जीवन में पहली बार मौका मिला. उस हिन्दी दिवस पर मेरी इतनी हिन्दी हुई जितनी किसी आम दिवस पर भी नहीं हुई होगी. मैं जो कुछ जानता हूँ हिन्दी में ही जानता हूँ. इससे अधिक मुझसे आशा भी नहीं की जा सकती. लोगों ने मुझे नकार दिया. उलाहनों की झड़ी लगा दी. कहने लगे आपने इस उत्सव को नीरस बना दिया. ऐसे लगने लगा मानों श्मशान घाट पर इकट्ठे हुए हों.

मुझसे पूर्व वक्ता ने हिन्दी के साथ अन्या भाषाओं से तालमेल बिठाकर बोलने में अपनी धाक जमा ली. मैं इकलौती ताली के लिए तरस गया. जबकि उन महाशय ने उस दिन तमाम तालियों की वसीयत खुद के लिए लिखवा दी. विभिन्न भाषाई एकता एवं परस्पर सामंजस्य तथा एक भाषा को दूसरी भाषा के साथ मित्रवत सद्भावना दिखाते हुए उन्होंने जो विचार प्रकट किये उससे सारी सभा सुदबुध खो बैठी. उन्होंने अपने धुऑधार विचारो से श्रोताओं को जो घायल करना शुरु किया कि अन्त तक पीछा नहीं छोड़ा. माई डियर ब्रदर्स एण्ड सिस्टर्स. टूडे इज हिन्दी दिवस. हिन्दी इज ब्यूटीफुल लॉग्वेज. हिन्दी इज माई मदर टंग. मैं चाहता हूँ कि विश्व के विभिन्न देशों में यह फलती फूलती नजर आये. हिन्दी भाषा का फ्यूचर काफी उजला है. वर्ल्ड के अनेक कन्ट्रीज में हमारी हिन्दी बहुत पापुलर बनती जा रही है. उन्हें न केवल हमारी लॉग्वेज ही अच्छी लगती है बल्कि हमारे वतन से भी उन्हें लव होने लगा है. ऐसे में हमारी ड्यूटी बनती है कि विदेशों से आने वाले स्टूडेन्ट्स की फैसेलिटीज का पूरा-पूरा ध्यान रखें.

हिन्दी दिवस इज वैरी नाइस दिवस. इस दिवस की महत्ता और प्योरिटी को हमें बनाये रखना हैं. यह तभी सम्भव है जब हम इसी प्रकार इस दिवस को सेलिब्रेट करते रहेंगें. अन्त में मैं यही कहूँगा कि हमें इग्लिश लॉग्वेज से इतना खतरा नहीं है जितना हिन्दी जानने वालों से हैं. हिन्दी जानने वाले ही हिन्दी के शत्रु हैं. गॉड से यही प्रार्थना है कि हमारी हिन्दी भाषा नेशनल लॉग्वेज के रुप में हर गली, मुहल्ले में उगती हुई दिखाई दें.

बाल काव्य प्रतियोगिता

आयोजकः विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद एवं हि.मा. 'विश्व स्नेह समाज

1. इस प्रतियोगिता में *10 से 18 वर्ष की उम्र* का कोई भी बाल कवि/कवियित्री भाग ले सकता/सकती है. 2. प्रतिभागी को अपने छायाचित्र के साथ जीवन परिचय व वह रचना भेजनी होगी जिसे वह प्रतियोगिता में पढ़ना चाहता है. 3. रचना पर *"यह मेरी मौलिक रचना है"* लिखना व नाम, पता लिखना अनिवार्य होगा. 4. प्रतियोगिता *फरवरी 2008 में इलाहाबाद* में आयोजित की जाएगी. अपनी प्रविष्टि हमें *30 नवम्बर 2007* के पूर्व जबाबी लिफाफे के साथ भेजें.

लिखेंः सचिव, विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान,

एल.आई.जी-६३, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद, **मो०:** ०९३३५१५५९४६

बेटी को सुलक्षणा बहू बनाये

✍विश्वनाथ टेकड़ीवाल, मुम्बई

प्रत्येक माता-पिता की इच्छा होती है कि उसकी बेटी का जीवन सुखमय हो. इसलिए कई बार माताएँ यदि बेटी दूर हो तो उसे बार-बार फोन कर उसके दैनिक, पारिवारिक जीवन, सास-ससुर ननद आदि के व्यवहार के विषय में जानने व फिर उसे तरह-तरह की सलाह देने का प्रयास करती हैं और कई बार तो उसके परिवार के सदस्यों के साथ टोका-टाकी करने में भी संकोच नहीं करती. इससे धीरे-धीरे दोनों परिवारों में तनातनी का वातावरण पैदा हो जाता है. बहू के व्यवहार को लेकर झगड़े होने लगते हैं और अनेक बार तलाक या बहू को पीटने, जलाने तक की स्थिति आ जाती है और दुर्भाग्य से यदि बेटी का विवाह शहर में हुआ हो तो बेटी से फोन व बात करने, उससे मिलने के बहाने बेटी और दामाद को घर पर बुलाने, मौके बे मौके उसके घर चले जाने तथा उनको शिक्षा देने का ऐसा सिलसिला आरंभ होता है कि परिवार के सदस्यों के साथ बहु कटने लगती और उनके साथ उसका तादात्म्य धीरे-धीरे खत्म होने लगता है. उसे सास-ससुर, देवर-जेठ, ननद बुरे लगने लगते हैं. वह बात-बात में अपने परिवार के सदस्यों को समझ लेने या हमेशा के लिए मायके चले जाने की ध मकी देने लगती है. परिणाम स्वरुप दोनों परिवारों में प्रेम स्नेह का नाता, कटुता का स्थान ले लेता है.

बच्चियाँ माता-पिता के अनावश्यक संरक्षण के कारण ससुराल की किसी मर्यादा तक को स्वीकार करने के लिए तत्पर नहीं होती और बेटी-दामाद की गृहस्थी बसने से पहले ही नष्ट होने को हो जाती है. जो माताएँ समझदार नहीं होती, वे अपनी बेटियों-दामाद के मन में उनके परिवार के सदस्यों के प्रति धीरे-धीरे विषवमन करके ऐसी भावना भर देती है कि उनका परिवार के सदस्यों के साथ रहना कठिन हो जाता है और परिवार कलह का केन्द्र बन जाता है. माँ की यह सीख प्रारंभ में इतनी मीठी होती है कि भोली-भाली बच्चियाँ उसके परिणाम को समझ नहीं पाती और जब तक समझ पाती है उसका गृहस्थ जीवन बरबादी के कगार पर पहुंच चुका होता है. कोई भी परिवार नहीं चाहता कि उसके कार्यो में कोई दूसरा हस्तक्षेप करे और वहाँ जब उसके कार्यो में दखलदाजी कर दोनों परिवारों की सुख शांति को राहु-केतु बन जाती है. अतः समझदार माताओं को चाहिए कि वे विवाह के बाद बेटी के पारिवारिक जीवन में यथासंभव हस्तक्षेप न करें, उसे अपने जीवन की राह स्वयं बनाने दें. यदि बेटी प्रारंभ में भावुकता या स्नेह के अभिभूत होकर ससुराल वालों की शिकायत भी करे ता उसे समझाकर बात को वहीं समाप्त कर दें. उसे न तो बार-बार स्वयं फोन करें और न ही घर की छोटी-छोटी बातों अथवा परिवार के सदस्यों के व्यवहार को लेकर शिकायत करने के लिए प्रोत्साहित करें. जब कभी भी उसे सलाह देनी पड़े तो परिवार के सदस्यों के साथ तादात्म्य करने और अपने मधुर व्यवहार, त्याग, समर्पण द्वारा उनके दिल को जीतने की सलाह ही दें. किसी भी स्थिति में उसके पारिवारिक जीवन में हस्तक्षेप से बचें. बेटी को ईंट का जबाब पत्थर से देने या मजा चखाने की शिक्षा हरगिज न दें. उसके परिवार से हर समय निश्चित दूरी और मर्यादा को बनाये रखें. इसी से आप तथा आपकी लाड़ली पुत्री का हित है. इससे न केवल आपकी बेटी का ग्रहस्थ जीवन ही सुखमय होगा अपितु अपनी बेटी के सुख की अनुभूति करेंगे.

वैवाहिक जीवन की खुशी का मूलमंत्र-दाम्पत्य जीवन में खुशियाँ कैसे

✍धन-सम्पति लक्ष्मी नहीं है, पवित्र, कुशल, पति के अनुकूल चलनेवाली और मीठा बोलने वाली स्त्री ही लक्ष्मी है.

✍ विवाह एक ऐसी पुस्तक है जिसका पहला अध्याय कविता में लिखा जाता है और शेषभाग गद्य में.

✍विवाह उपरांत पति ही एकलौता स्वामी होगा तथा उसके साथ सदैव उच्च-व्यवहार रखना, अपने पति की आज्ञा का पालन करना ही एक नारी का श्रेष्ठ और पवित्र कर्त्तव्य हैं.

✍ अपनी उच्च शिक्षा अथवा पिता की श्रीमंताई का अभिमान मत करना. पति के समझ अपने पिता के वैभव का गुणगान कभी मत करना.

✍ सदा लज्जाशील कपड़े पहनना, बहुत भड़कीले तथा आकर्षित करने वाले कपड़े मत पहनना और सदा साद्‌गी से रहना.

बनी रहें, हर दिन फूलों की तरह कैसे महकें. यदि कुछ बातों का पति-पत्नी ध्यान रखें तो सुख चैन से जीवन की गाड़ी चल सकती है.

♣ जो कुछ आप दोनों के मन में है उसे आपस में एक-दूसरे के सामने प्रकट कर दीजिए, मन में हरगिज मत रखिए.

♣ स्पष्ट शब्दों में बताइये कि आपको क्या पसंद नहीं है और आप किस तरह के बदलाव की अपेक्षा रखते है.

♣ अपने झगड़ों के बीच रिश्तेदारों या मित्रों को कभी आने मत दीजिए. इसका फैसला आप दोनों बैठकर ही सुलझा लीजिए.

♣ वैवाहिक दिक्कतो, झगड़ो को सब लोगों के सामने प्रदर्शित मत कीजिए.

♣ मुद्दे की बात पर ही टिके रहिये. बेकार की बातों को लेकर झगड़ा मत बढाइये.

♣ प्रहार, समस्या पर करिए, न कि दूसरों पर.

♣ जब क्रोध में हो बहस न करें. शांत रहने का प्रयास करे.

♣ अपने अधिकारों पर बहुत अधिक बल मत दीजिए.

♣ अपने जीवन साथी में आमूल परिवर्तन लाने का प्रयास कभी मत करिए.

♣ प्रत्येक व्यक्ति में कुछ न कुछ कमी अवश्य होती है. अपने जीवन साथी की कमियों को स्वीकार करके तालमेल करने की कोशिश करें.

♣ अधिक बच्चे भी वैवाहिक जीवन की खुशियों को कम कर देते हैं. अतः दोनों ही आपस में इस बात का ध्यान रखें. इससे भी आपका घर संसार सुखी बना रहेगा.

याद रखिए कि वैवाहिक सामंजस्य, जीवन पर्यन्त चलने वाली लम्बी प्रक्रिया है. सांमजस्य ही वैवाहिक जीवन का मूल मंत्र है. अलग-अलग आदतों, स्वभाव और परिवेश के दो व्यक्तियों के बीच पूर्ण सामंजस्य ही वैवाहिक जीवन में सुख और खुशी का आधार हो सकता है.

विदाई के अवसर पर माता-पिता की पुत्री को शिक्षा-प्यारी पुत्री! यदि तू इतना स्मरण रखेगी तो संसार में बहुत सुखी रहेगी-

♣ आज विवाह होने के पश्चात तू हमारी नहीं रहेगी. आज तक तू जिस प्रकार हमारी आज्ञा का पालन करती थी, उसी प्रकार अब अपने सास-ससुर तथा पति की आज्ञा का पालन करना.

♣ विवाह उपरांत एकमात्र पति ही तेरे स्वामी होंगे. उनके साथ सदैव उच्च-व्यवहार रखना और नम्रता रखना. अपने पति की आज्ञा का पालन करना ही एक नारी का श्रेष्ठ और पवित्र कर्त्तव्य हैं.

♣ ससुराल में सदैव विनय और सहनशीलता रखना तथा कार्यकुशल बनना.

♣ ससुराल में व्यक्तियों के साथ कभी ऐसा व्यवहार मत करना जिससे उन्हें दुःख हो, यदि ऐसा करोगी तो पति का प्रेम खो बैठोगी.

♣ कभी क्रोध मत करना, पति कोई भूल करे तो मौन रहना और जब पति शांत अवस्था में हो, तब उसे वास्तविक स्थिति नम्रतापूर्वक समझाना.

♣ अधिक बातें मत करना. असत्य मत बोलना. पड़ोसी की निन्दा मत करना. जो कर सको वह सेवा सबकी करना.

♣ हाथ देखने वाले ज्योतिषी से अपनी भाग्य-रेखाओं के विषय में कभी मत पूछना. तेरा कार्य ही तेरा भाग्य निर्मित करेगा यह निश्चय समझ लेना.

♣ परिवार में छोटे-बड़े सब की सेवा करने से सबका प्रेम प्राप्त होगा.

♣ अपने घर का काम खूब मन लगाकर करना और सावधानी पूर्वक सब व्यवस्था करना.

♣ अपनी उच्च शिक्षा अथवा पिता की श्रीमंताई का अभिमान मत करना. पति के समझ अपने पिता के वैभव का गुणगान कभी मत करना.

♣ सदा लज्जाशील कपड़े पहनना, बहुत भड़कीले तथा आकर्षित करने वाले कपड़े मत पहनना और सदा सादगी से रहना.

♣ आतिथ्य ही घर का वैभव है, प्रेम ही घर की प्रतिष्ठा है, व्यवस्था ही घर की शोभा है, सदाचार घर की सुगंध है और समाधान ही घर का सुख है.

♣ ऋण हो जाए इतना खर्च मत करना, पाप हो ऐसी कमाई मत करना, क्लेश हो ऐसा मत बोलना, चिंता हो वैसा मत करना, रोग हो वैसा मत खाना और शरीर दिखे वैसे कपड़े मत पहनना.

बेटी! हमारी यह अंतिम सुनहरी शिक्षा है, इसे जीवन में उतारना. हम तरे जीवन में आजादी, प्रगति, समृद्धि, भक्ति शांति और दीर्घायु की कामना करते है.

सुखी दाम्पत्य जीवन की सुशिक्षाः विवाह एक ऐसी पुस्तक है जिसका पहला अध्याय कविता में लिखा जाता है और शेषभाग गद्य में. ठीक है, वैवाहिक जीवन का आरंभ भावुकता में होता है, पर उसकी पूर्णता एक यर्थाथ है. कहे भावुकता और यर्थाथ में सामंजस्य स्थापित करने की कला ही सुखमय दामपत्य की कूंजी है.

महर्षि मनु ने कहा हैः धन-सम्पति लक्ष्मी नहीं है, पवित्र, कुशल, पति के अनुकूल चलनेवाली और मीठा बोलने वाली स्त्री ही लक्ष्मी है. इन चारों गुणों को धारण करके प्रत्येक स्त्री को गृह-लक्ष्मी बनना चाहिए.

अध्यात्म अमृत, कांदिवली, मुम्बई

मुद्दा

आरक्षण और सामाजिक उत्थान

गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

हमारा अतीत अत्यन्त ही गौरव मंडित रहा है. भारत विश्व का मुकुटमणी रहा है. इस देश की सुनहली मिट्टी विदेशियों को चुम्बक की भॉति सदैव अपनी ओर आकृष्ट करती रही है. मानव जाति हेतु ज्ञान-विज्ञान एवं नीति कल्याण की किरणें विकीर्ण होकर यही से पूरे विश्व में फैली थी. लेकिन आज भ्रष्टाचार, लूटमार, जातिवाद एवं अंधविश्वास के दल दल में उलझा हुआ है. ये हमारे आपसी प्रेम को दफन कर रही है. आजादी के इतने सालो बाद भी अछूत एवं हरिजन वर्ग प्रगति की मूलधारा एवं मौलिक अधिकारों से वंचित है. संविधान में मात्र दस वर्ष के लिए शुरु की गयी आरक्षण व्यवस्था आज भी कायम मगर अपेक्षित सुधार नहीं हो पाया. इसका लाभ केवल कुछ लोगों तक ही सीमित रहा. कुछ लोग ही बार-बार लाभान्वित हो रहे है. लेकिन गॉव का आदमी आज भी इससे वंचित व अनभिज्ञ है. कई बार देखा जाता है कि अच्छी प्रतिभाओं को अवसर न देकर अकुशल और लापरवाह उम्मीदवारों को आरक्षण के कारण नियुक्त कर दिया जाता है. उन्हें शैक्षणिक संस्थानों से लेकर, नौकरी, पदोन्नति आवंटन में भी आरक्षण का लाभ मिलता रहता है. इससे शेष समाज में द्वेष फैलता है.

इसी संदर्भ में १९५३ में गठित काका कालेलकर समिति ने भी सिफारिश की थी कि आरक्षण से जात-पात को बल मिलेगा, अतः आरक्षण नहीं होना चाहिए. १९७७ में गठित मंडल आयोग ने ३३४७ जातियों को आर्थिक रुप से पिछड़ा मानते हुए रिर्पोट तैयार की. जिसे दस सालो तक धुल खाने के बाद १९९० में वी.पी.सिंह ने लागू कर एक विद्वेष का बीज और बो दिया. देश में एक ओर तो भयंकर बेरोजगारी और उस पर आरक्षण का बॉध. यानि 'एक तो करैला ऊपर से नीम चढ़ा' वाली कहावत भली भॉति चरितार्थ होने में बाकी कोर कसर भी पूरी कर दी.

> आरक्षण सीमित मात्रा में आर्थिक आधार पर और वह भी पूरी छान-बीन करके तथा पूरे जीवन में एक आदमी को जीवन में केवल एक बार ही मिलनी चाहिए.
>
> अभी तो राजस्थान में इसकी आग धधकी है, ऐसी आग पूरे देश में अलग-अलग भी धधक सकती है. दूसरी बात देश की होनहार प्रतिभाएं हतोत्साहित हो रही है और अच्छे रोजगार की तलाश में देश से पलायन कर

जहॉ तक आरक्षण देने की बात है तो आरक्षण की व्यवस्था ही गलत है और यदि आरक्षण देने की ठान ही रक्खी है तो -

० आरक्षण सीमित मात्रा में दिया जा सकता है पर जाति/ धर्म/ संप्रदाय के नाम पर नहीं बल्कि आर्थिक आधार पर और वह भी पूरी छान-बीन करके दिया जाना चाहिए.

० आरक्षण की सुविधा एक आदमी को जीवन में केवल एक बार ही मिलनी चाहिए.

० कोई भी योग्य प्रतिभागी चाहे वह किसी भी जाति का है, और यदि वह गरीबी रेखा के नीचे का जीवन बसर करता है तो उसे उसकी पसंद के अनुसार किसी भी एक अवसर पर आरक्षण दिया जाए तो शायद यह समाज के सभी वर्गो को मान्य होगा.

यदि आरक्षण रूपी लाइजाज बीमारी से गम्भीरता पूर्वक नहीं निपटा गया तो अभी तो राजस्थान में गुर्जरों ने आग धधकाई है, कल को कुछ स्वार्थी नेताओं व कुछ स्वार्थी लोगों के कारण अन्य प्रदेशों की अन्य जातियां भी अलग-अलग आग धधका सकती है. फिर आप कहॉ-कहॉ कमेटी बैठाओगे, किस-किस जाति को आरक्षण की लिस्ट में शामिल करोगे. किसी राज्य में कोई जाति पिछड़ी है तो दूसरे प्रदेश में अन्य जाति. दूसरी बात यह है कि आरक्षण के कारण देश की होनहार प्रतिभाएं हतोत्साहित हो रही है और अच्छे रोजगार की तलाश में देश से पलायन कर रही है.

संविधान में उल्लिखित मौलिक अधिकारों के अनुसार सभी को समानता का अधिकार प्राप्त है तो फिर किसी जाति के लिये आरक्षण क्यों? हर किसी को अपनी योग्यता के आधार पर समान रुप से अवसर प्रदान किये जाने चाहिए, आरक्षण से लाभान्वित हुई तमाम जातियों लोग उच्च्व सरकारी पदों पर कार्यरत है और उसी जाति के कुछ लोग आज भी दो जून की रोटी के लिए मुहताज है. ऐसे में समान अधिकारों का ढिढोरा पिटने वाले नेताओं, नीति नियंताओं की समानता बात कहा चली जाती है.

आरक्षण प्राप्त अनेक अयोग्य एवं लापरवाह प्रशासकों के कारण अनेक कार्यालय एवं संस्थान प्रभावित है. कल को पूल/मकानें भी आरक्षित होगी.

++++++++++++++++++++++

श्रीमती (डॉ०) तारा सिंह सरंक्षक सदस्य

तारा जी का जन्म बिहार प्रांत के मुंगेर जिले के रतनपुर गॉव में हुआ था. कक्षा १ से स्नातक तक इन्होंने भागलपुर सिटी के गर्ल्स छात्रावास मे रहकर पूरी की. इन्हें मेरिट छात्रवृति भी मिली. बचपन से कविता रचने की शौकीन ताराजी बराबर खेल, कूद, संगीत, नृत्य, वाद-विवाद एवं कविता और आलेख लेखन प्रतियोगिताओं में सक्रीय भाग लेती रहीं. कॉलेज की पढ़ाई समाप्त होते ही इनकी शादी डॉ. ब्रहमदेव प्रसाद सिंह, प्रवक्ता, रसायन, आचार्य जगदीश चंद्र बसु कॉलेज, कलकत्ता से हो गई और वे बिहार छोड़कर कलकत्ता चली आई. यहॉ रहकर अपनी व्यस्त जिंदगी के बावजूद कविताएं लिखती रही, जो विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में नियमित प्रकाशित होती रही. लोगों ने इन्हें काफी सराहा भी. लेकिन आर्थिक तंगी के कारण इनकी रचनाएं पुस्तक का रूप न ले सकी. मगर अपने पति के साथ विभिन्न साहित्यिक सभाओं एवं कवि-गोष्ठियों में लगातार भाग लेती रही.

ताराजी अपने पति के अवकाश ग्रहणोपरान्त एवं अपने दोनों इंजीनियर पुत्रों के स्थायित्व के बाद मुम्बई में आकर साहित्य सेवा में तल्लीन हो गई और शुरू हो गया प्रकाशनों का दौर २००४ में एक बूंद की प्यासी, सिसक रही दुनिया प्रकाशित हुई. प्रोत्साहन पत्रों ने ऊर्जा का काम किया. प्रकाशनों का सिलसिला जो चला वो चलता ही रहा. हम पानी में भी खोजते रंग, एक पालकी चार कहार, सॉझ भी हुई तो कितनी धुँधली, एक दीप जला लेना, रजनी में भी खिली रहूँ किस आस पर, अब तो ठंढी हो चली जीवन की राख, यह जीवन प्राः स्मरण-सा लघु है प्रिये, तम के धार पर डोलती जीवन की नौका तक जारी है. इनकी रचनाएं १५ सहयोगी काव्य संकलनों में भी स्थान पा चुकी है. इनकी जीवनी ऐशिया-पेसीफिक हूज हू २००६, वोल. ६ एवं अफ्रो/एशियन हूज हू २००६ में प्रकाशित हो चुकी है.

गॉव की पली-बढ़ी कवयित्री तारा सिंह को प्राकृतिक सौन्दर्यता एवं सादगी अपनी ओर आकर्षित करती रही. इन्होंने लौकिक प्रेम से लेकर अलौकिक आस्था को एक सूत्र में बॉधकर उस निराकार के साथ प्राणी-जीवन के स्नेह-सम्बधों के दाम्पत्य बंधन की सृष्टि कर डाली. इनकी मर्मस्पर्शी कविताओं में मानव का संवेगात्मक संस्कार प्रतिफलित होता दिखता है.

आपके पति सम्माननीय डॉ. बी०पी.सिंह जी एक सरल, मृदु स्वभाव के धनी बड़े ही मिलनसार व्यक्तित्व के धनी विद्वान है. विज्ञान के क्षेत्र से होते हुए भी अपनी अर्द्धांगिनी के साथ कदम से कदम मिलाकर चलते है.

ताराजी की कविताएं १३ वेबसाइटों पर लगातार प्रकाशित होती रही है. इनकी कविता हिन्दी फिल्म 'जय हिन्द सिपाही जी' के लिए श्री माधव भट्ट, मुम्बई द्वारा टाइटिल गीत के रूप में ली गई है, जो सिनेमा घरों में प्रदर्शित हो चुकी है.

तारा जी को ३६ राष्ट्रीय, साहित्यिक एवं शैक्षणिक संस्थानों द्वारा 'विद्या वाचस्पति', विद्या वारिधि, राइजिंग पर्सनालटी ऑफ इडिया अवार्ड एण्ड गोल्ड मेडल, सन्त कबीर पुरस्कार, निराला सम्मान, महादेवी वर्मा सम्मान, भारती भूषण सम्मान, मीरा स्मृति सम्मान, विशिष्ट साहित्य साधना सम्मान, राष्ट्रीय काव्य गौरव सम्मान आदि मानदोपाधियां/सम्मानों से अलंकृत किया गया है.

++++++++++++++++++++

ग़ज़ल

डॉ.तारा सिंह

काजल जैसा जिसे रचाया दो नयनों में
ऐसे अपनापन को कहते प्यार नहीं है।

एक झलक पाने को नम हो जाता अन्तर
विरह वेदना है, उसका इंतजार नहीं है।

ख़्वाब में आना, रात बिताना इन बॉहों में
जीवन का यह सत्य कटु समाचार नहीं है।

दिल देना, दिल लेना जीवन देना है
जीते मरते हैं प्रेमी, यह लेन-देन व्यापार नहीं है

दशो दिशाओं में बिखरी सुगंध तुम्हारी
भँवरों की शैतानी कि घर में बहार नहीं है।

सूरज के संग उगते फ़िज़ा महक जाती है
नहीं शिकायत करना मुझको प्यार नहीं है।

तेरी नजर ने गोदा छूरे तन पे तेरा नाम
फिर भी कहते हो मुझ पर एतवार नहीं है।

पल भी नहीं लगा तारा को गगन सौंपते
और चॉदनी कहती, कोई सरोकार नहीं है।

कहानी

अपाहिज

✍साबिर हुसैन, खीरी, उ.प्र.

उसे लगता है, वह अपनी ही कहॉनियों का एक निरीह पात्र बनकर रह गया है. उसने अपने कथानकों में गरीबी, असहाय स्थिति को झेलते जितने पात्रों की रचना की, आज उनसे अधिक स्वयं को असहाय महसूस कर रहा है. शारीरिक अक्षमता उसे अपने विचारों को कागज पर भी उतारने नहीं दे रही है. उसके अन्तर में विचारों का भयंकर झंझावात चलता रहता है. उसकी इच्छा होती है कि उसके विचार कोई लिखता रहे. मन में अभी भी बहुत कुछ लिखने का उत्साह शेष है, लेकिन मृत्यु की ओर निरन्तर बढ़ता शरीर साथ नहीं देता. उसकी बेगार करने के लिए कोई तैयार नहीं. एक बार उसने अपनी बेटी सुषमा से कहा था "मैं बोल देता हूँ और तुम लिख दो."

"तुमको तो खाली पड़े-पड़े कुछ न कुछ सूझता ही रहता है, लेकिन बेगार करने का मेरे पास टाइम नहीं हैं. " सुषमा ने स्पष्ट कह दिया था. उसके बाद उससे कुछ कहने का साहस ही नहीं हुआ.

टी.बी. की बीमारी उसके शरीर को लगातार खोखला करती जा रही है, उसकी शक्ति निरन्तर क्षीण होती जा रही है. खांसी के साथ वह ढेर-सा खून थूकता है. कुछ दिन वह सरकारी अस्पताल से दवा लाया. किन्तु वहां भी बाहर की दवाएं लिख देते है, इसलिए उसने दवा लानी बन्द कर दी.

"प्रकाश, तुम्हारी बाबूजी कहां...?"

"अपाहिज उस छप्पर के नीचे पड़ा है"

"प्रकाश तुम्हें बाबूजी के लिए ऐसे शब्द का प्रयोग नहीं करना चाहिए."

"अपाहिज नहीं तो क्या कहूं? बताओ, उन्होंने हमें क्या दिया है? बहुत बुद्धिमान थे लेकिन पैसे का सच नहीं समझ सके. जिसे आज का छोटा-सा बच्चा भी समझता है. बड़े होने के दम्भ में मजदूरी भी न कर सके और खुद भी भूखों मरे, हम सबको भी भूखा मारते रहे." प्रकाश कह रहा था.

"बाबूजी ने कभी कथनी-करनी में अन्तर नहीं रखा. कभी कलम का दुरुपयोग नहीं किया."

"सच की महानता किताबों में अच्छी लगती है, जिसकी आंखे हैं, उसे दिखाई देते है कि सच के रास्ते पर चलने वाले की क्या दुर्दशा होती है. सहित्यकार है क्या, दूसरों के टुकड़ों पर पलने वाला? पहले वह राजा-महाराजाओं की प्रशंसा में गाता-बजाता था और बदले में बख्शीश पा जाता था. आज जिसका जुगाड़ फिट है, वही सफल साहित्यकार है. बाबूजी जिन्दगी भर कलम घिसते रहे, उन्हें क्या मिला?" प्रकाश कह रहा था.

"उन्हें तो संतोष है कि उन्होंने अपना जीवन निरर्थक नहीं गंवाया."

"उन्होंने भले ही अपना जीवन सार्थक बना लिया हो, लेकिन हमारा जीवन तो निरर्थक हो गया. क्या कोई उनको खण्डकाव्य, उपन्यास या कहानियों को दहेज में लेकर सुषमा दीदी को ब्याह ले जायेगा?"प्रकाश कटु स्वर में बोला.

अपाहिज शब्द विषाक्त तीर की तरह उसके हृदय में धंस गया, असह्य मानसिक पीड़ा से उसने आंखे बन्द कर ली. आगंतुक के स्वर से वह जान गया था कि शिवराज आया था, प्रकाश की बातों से शायद वह आहत होकर वापस लौट गया. शिवराज भी लिखता है. उसकी साहित्य में गहरी रुचि है. वह अक्सर उसके पास आ जाता है. शिवराज ही है जो उसके पास आकर बैठ जाता है, जिससे उसका कुछ समय अच्छा कट जाता है. कई बार शिवराज ने चाहा कि वह बोल कर उसे लिखा दे तो उसने मना कर दिया कि बेकार के श्रम का क्या अर्थ?

उसकी चाय पीने की इच्छा हो रही थी किन्तु वह टकटकी लगाये छप्पर के लटकते तिनकों को देख रहा था. उसकी इच्छा-अनिच्छा का घर में कोई महत्व नहीं है, वैसे भी घर की स्थिति ऐसी नहीं है कि घर में तीन-चार बार चाय बनें. बाहर प्रकाश अब भी बड़बड़ा रहा था, जब वह उत्तेजित हो जाता है तो काफी देर तक बड़बड़ाता रहात है. उसे अपने जीवन की सफलता का कोई विशेष दुःख नही है, साहित्य सेवा का मार्ग चुना था तो उसे मालूम था कि जीवन कांटो में ही कटेगा. कल्पना में डूबे रहकर उसने चुभन को महसूस नहीं किया, लेकिन परिवार की दृष्टि में वह अपराधी है कि उसने अपने शौक के लिए सभी को नर्क में झोंक दिया. आज प्रकाश एक दिन रिक्शा न चलाए तो खाने के लाले पड़ जाएं. स्वयं की व्यर्थता का एहसास उसे कहीं गहरे तक कचोट जाता है.

"लो चाय पी लो."

उसने देखा प्रकाश की मां चाय रख गयी थी. हर व्यक्ति अपने स्वर से उसे उपेक्षित होने का अहसास करा देता है. उठकर उसने चाय का गिलास उठा लिया और धीरे-धीरे चाय पीने लगा. चाय से उसे बड़ी तृप्ति महसूस हो रही थी. अब सुबह-शाम चाय मिल जाती है, यही बहुत है, वरना वह दिन भर में छः-सात कप चाय पी जाता था. ऐसा नहीं कि तब वह कोई बड़ा आदमी था. पिताकी छोटी-सी दुकान थी, वह भी उसी दुकान पर यदा-कदा बैठता था बापू जानता था कि उसका बेटा कुछ लिखता-पढ़ता रहता है. लेकिन उसने कभी टोका

नहीं, शायद उसे विश्वास था कि दुनियादारी में फंसकर वह सब भूल जाएगा. लेकिन शादी के बाद भी वह लिखता रहा था. दुकान के सहारे गृहस्थी की गाड़ी किसी तरह चल ही रही थी. बापू की मृत्यु के बाद घर-दुकान का बोझ उस पर आ पड़ा था. हल्दी-मिर्च की पुड़िया बांधना उसे कभी अपने स्तर के अनुरुप नहीं लगा. वह लिखने के लिए कलम उठाता तो ग्रहक आ जाता. उस समय पत्र-पत्रिकाओं में रचनाएं छपने लगी थी और कुछ पारिश्रमिक भी मिल जाता था. पाठको के प्रशंसा पत्रों ने धीरे-धीरे उसमें बड़े होने का अहसास भरना शुरू कर दिया था. एक दिन उसने दुकान बन्द कर दी थी. उसे विश्वास था कि जब वह साहित्य में जम जाएगा तो आजीविका भर तो अपनी मेहनत से कमा ही लेगा. लेकिन शीघ्र ही उसका भ्रम टूट गया था और उसका कटु यथार्थ से सामना हो गया था कि कलम के सहारे वह परिवार को सूखी रोटी भी नहीं दे सकता. उसने इस स्थिति को एक चुनौती के रुप में स्वीकार करते हुए रात-दिन परिश्रम से ढेरों रचनाएं लिख डाली थी. उनमें कुछ पारिश्रमिक सहित छपी थी, लेकिन वह पारिश्रमिक भी इतना नहीं था कि दस दिन भी घर में चूल्हा जल जाता. धीरे-धीरे जमा पूंजी समाप्त हो गयी थी. घर में सदैव ही कलह की स्थिति बनी रहती. घर के दरिद्रिय और अपनी असफलता के लिए वह पत्नी को ही दोषी ठहराता, लेकिन वह इस सत्य को भी जानता था कि आवश्कताएं पूरी न हो पाने की खीज ही झगड़े का कारण होती है. अपनी सामर्थ्य पर प्रयत्न के बाद भी वह कुछ नहीं कर पा रहा था. उसने टयूशन पढ़ाने शुरु कर दिये. फिर एक प्राईमरी स्कूल में मास्टरी की नौकरी कर ली. अंगूठा छाप स्कूल मालिक पढे-लिखो को मुर्ख बनाकर उनका शोषण करता. गलत का विरोध करने की बातें वह हमेशा लिखता रहा, लेकिन स्वयं इस स्थिति का विरोध कभी नहीं कर सका था.

शहर के बहुत से लोग जानते हैं कि वह साहित्यकार है, लेकिन शिवराज जैसे दो-चार लोगों को छोड़कर कभी किसी ने उसे महत्व नहीं दिया. कहने के लिए उसने हमेशा यही कहा कि वह तो कर्म में विश्वास करता है. इसलिए कर्म करता रहता है. लेकिन इतने श्रम के बाद भी उससे अधिक एम. एल.ए के मामूली चमचे का सम्मान हो तो कहीं अन्तर में चुभन तो महसूस होती है.

उस दिन प्रकाश फिर पी आया था. वैसे भी जब तक प्रकाश में रहता है वह घर के इन हालात के लिए उसे दोष देते हुए बड़बड़ता रहता है. लेकिन जिस दिन वह पी लेता है, सीधे उससे आकर उलझ जाता है. उस दिन भी वह सीधे उसकी चारपाई पर आकर बैठ गया था और रोते हुए बोला था-"बाबू तुम तो साहित्यकार बन गये और मुझे रिक्शेवाला बना दिया. दिनभर लोगों को घोड़े की तरह ढोता हूँ, फिर भी खाने से अधिक गालिया मिलती है.

"जिस दिन ऊपरवाले ने..."

"जिन्दगी भर तो इसी इन्तजार में बैठे रहे कि ऊपरवाला सुन लेगा तो हालात बदल जायेंगे... बाबू तुम तो बुद्धि वाले आदमी थे. यह भी जानते थे कि खद्दर वाले चोर-तस्कर, समाज के दुश्मन कालाबजारियें, मिलावट करने वाले सबकी इज्जत यहां हो सकती है, तुम जैसों की नहीं. तब तुमने ठगी, लूटमार, तस्करी से पैसा क्यों नहीं कमाया?"प्रकाश उसकी बात काटते हुए बोला था.

"गलत तो गलत...."

"पता नहीं किस सदी की परिभाषाएं आपने रट रखी है. गलत और सही का निर्णय यह समाज ही तो करता है और रोज देखते हो, कल के चोर-लुटेरें पैसे के बल पर इसी समाज के प्रतिनिधि ा बने बैठे है. पैसा है,यह सब देखते है. कैसे आया, इसे कोई नहीं देखता. तब तुमने ढेर सा पैसा क्यों नहीं कमाया? नाम ही अमर करना था तो ढेर-सा पैसा कमाते और अपने ही नाम पर साहित्यकारों को पुरस्कार बांटते. तब देखते बड़े-बड़े साहियकार तुम्हारी स्तुति गाते और दरवाजे पर हाथ बांधे खड़े रहते. जो बड़ा स्वाभिमानी बनता वह भूखो मरता, आपकी तरह. .." प्रकाश ने कहा था और बड़बड़ाता हुआ चला गया था.

प्रकाश जब पी लेता है तो उसे सम्भालना मुश्किल हो जाता है. उसे भी लगता है कि प्रकाश उससे अधिक सही-गलत की पहचान रखता है. साहित्य सेवा`क नाम पर उसने पूरे परिवार को नरक में झोक दिया है.वेतन, ट्यूशन और यदा-कदा मिलने वाले पारिश्रमिक से किसी तरह रोटी ही चल पायी, किसी बच्चे को ठीक से पढ़ा भी न कस. प्रकाश बड़ी कठिनाई से आठवीं तक पढ़ पाया और भूख से बिलबिलाते भाई-बहनों के लिए वह रिक्शा खींचने लग गया. लड़कियां भी कक्षा पांच तक ही पढ़ सकी. अधिक पढ़ाने की तो क्या अपने लिए कोई अच्छी किताब तक खरीदने की भी उसकी सामर्थ्य नहीं रही. आर्थिक विवशता के ही कारण वह साहित्य में भी कोई विशिष्ट पहचान न बना सका. उसने अपने उपन्यासों, कहानी संग्रहों के प्रकाशन के लिए कितने ही प्रकाशकों से पत्र-व्यवहार किया. अधिकांश ने पत्र का उत्तर तक नहीं दिया और जिन्होंने

उत्तर दिया, उन्होंने स्पष्ट लिख दिया कि पांडुलिपि के साथ इतने हजार रुपये भी भेजे. न वह रुपया भेज सका और न कोई पुस्तक छपी. उसकी इतनी भी सामर्थ्य नहीं थी कि वह दिल्ली, इलाहाबाद जाकर प्रकाशकों से व्यक्तिगत रूप से मिलता. प्रदेश की साहित्य अकादमी ने कभी पत्र के ढंग से उत्तर तक नहीं दिये. चाय पीकर उसने गिलास रख दिया और लेट गया.

उसने जानबूझकर कर पैसे की ओर से आंखे बंद रखी. वास्तविकता तो यह रही कि साहित्य के अतिरक्त उसे कभी कुछ सूझा ही नहीं. अवचेतन मन में सदैव एक विश्वास बना रहा कि एक दिन वह भी एक बड़ा साहित्यकार बनेगा. जगह-जगह उसका सम्मान होगा, किन्तु सारी उम्र की साधना के बाद भी वह अपनी कोई पहचान नहीं बना सका. आज कितने ही लेखकों को वह जानता है जो पैसे और पद के सहारे प्रतिष्ठित साहित्यकार है.

उसके सीने में तेज दर्द हो रहा था, दिन प्रतिदिन वह अशक्त होता जा रहा है. बाहर प्रकाश की मां बड़ाबड़ा रह है, "जितना कमाओ, पेट को ही पूरा नहीं पड़ता. बुढ़ा मरेगा तो कफन कहां से आयेगा?"

वह जानता है, घर में सभी उसकी मौत पर होने वाले खर्च के भय से त्रस्त हैं.

शिवराज ने बताया कि उसने उसकी आर्थिक सहायता के लिए प्रदेश की साहित्य अकादमी को लिखा है तथा उसकी अस्वस्थता का समाचार कई अखबारों में छपवाया है. साहित्यकार की नियति के अनुरुप मृत्यु के बाद उसे मान देंगे, लेकिन शायद सिर्फ शोकसभा. शिवराज के प्रयत्न से ही कुछ अखबारों ने चार लाइन में उसकी बीमारी का समाचार छाप दिया, जबकि नेता की छींक का समाचार भी मुखपृष्ठ पर बाक्स में छपता है. नेताओं के सहारे कितने ही विदेश घूम आते है और ढेरों सारी सुविधाएं प्राप्त कर शान से जीते हैं. दोनों एक-दूसरे के हितों का ध्यान रखते हैं.

बाहर से आ रही आवाजों से उसकी तंद्रा भंग हो गयी.

"हम लोग महेश जी से मिलना चाहते है, हम लोग साहित्य अकादमी से आए हैं."

अनायास उसके दिल की धड़कन बढ़ गई, आज सभी को पता चल जाएगा कि उसके जीवन भर की तपस्या व्यर्थ नहीं गई.

"यहां कोई महेशजी नहीं रहते. यह प्रकाश रिक्शेवाले का घर है." प्रकाश कह रहा था वह आज फिर पी आया था.

"यह बाबूजी से मिलने आए है."शिवराज कह रहा था.

"क्या करेंगे मिलकर, यही कहेंगे कि हम भी देने आए है. जीवनभर की मेहनत के बदले में उन्हें भूख और टी. वी. की बीमारी मिली है. यहां प्रतिभाएं भूखो मरती है या भिखारी बनती है. वे रिक्शेवाले के बाप है, इसीलिए अभी तक जिन्दा है." प्रकाश तीव्र स्वर में कह रहा था.

"तुम्हें क्या हो गया है प्रकाश, घर आए मेहमानों को घर में बुलाने की बजाए उन्हें अपमानित कर रहे हो." शिवराज बोला.

"महेश जी की नियति भी कबीरदास वाली है." एक बोला, "हां, मैं भी कबीर के कपूत कमाल की तरह हूँ. कबीर के पास कलम थी तो उन्होंने उसे कपूत लिख दिया, लेकिन किसी ने कमाल से पूछा था कि उसे क्या दुःख है. बाबूजी भी तो स्वार्थी है. स्वयं अमर होने के लिए हम सबको जीते जी नरक में झोक दिया." प्रकाश तेज स्वर में कह रहा था.

"इसने पी रखी है, हम फिर कभी आएंगे." किसी ने कहा. वह समझ गया सभी चले गये है. प्रकाश अभी भी बड़बड़ा रहा था. तभी प्रकाश की मां बोली-"अच्छा किया, भगा दिया, वरना अभी चाय-पानी का भी इंतजाम करना पड़ता."

उसके सीने का दर्द तेज हो रहा था और खांसी भी रुकने का नाम नहीं ले रही थी. उसने दोनों हाथों से सीने को दबा लिया. ढेर-सा खून थूकने के बाद वह निढ़ाल हो गया. प्रकाश की मां भी बड़बड़ा रही थी.

ग़ज़ल

वह किससे प्यार करते हैं बताना सख़्त मुश्किल है।
लगाते है गले किसको बताना सख्त मुश्किल है।
ज़माना है सियासत का, सभी है चाहते कुर्सी
मिलेगी पर किसे यारों बताना सख्त मुश्किल है।
वो नहो हों, या मुजरिम हो, वो साधू हो, या जादूगर,
छुपा बैठा कहॉ शैतां, बताना सख़्त मुश्किल है।
जहां कल झोपड़ी थी, आज बंगला है बना यारों।
वो हिकमत कौन सी है, ये बताना सख्त मुश्किल है।
यहॉ कितने ही लालू है, यहॉ कितने ही पप्पू है
किसे जूते से पिटवायें, बताना सख़्त मुश्किल है।
पियों तुम चाय कुल्हड़ में, उसे फिर खींचकर मारों
किसे जाकर लगेगा, यह बताना सख़्त मुश्किल है।
उतर आये अखाड़े में, बेर्मजी और नानावति,
कि इनमें कौन जीतेगा, बताना सख्त मुश्किल है।
नियाज़ हंसकर कभी हमसे भी कर लेते थे बातें
वो दिन कब फिर से लौटेगें, बताना सख़्त मुश्किल है।

प्रो. भगवत प्रसाद नियाज, अहमदाबाद

रूहानियत से सराबोर है मुनीर बक्श आलम की 'राहे-हक़'

प्रख्यात शायर एवं यथार्थगीता के उर्दू अनुवादक मुनीर बख्श आलम की रूहानी ग़ज़लों के संकलन 'राहे-हक़' का ११ मार्च को तत्वदर्शी संत स्वामी श्री अड़गड़ानन्दजी महाराज ने सक्तेशगढ़ आश्रम में विमोचन किया. इस अवसर पर स्वामी जी ने कहा कि दुर्लभ मानव तन को सार्थक बनाने के लिए राहे-हक़ पर चलना प्रत्येक मनुष्य के लिए जरूरी है. उन्होंने कहा कि 'राहे-हक़ वास्तव में वही भगवतपथ है, जिसे सृष्टि के अनादि काल से अब तक तमाम मनीषी- महापुरूषों, सूफी-सन्तों ने समय-समय पर दृढ़ाया है. श्रीमद्भगवदगीता का भी यही दर्शन है. लोकाचार के नाम पर संसार में तमाम कर्म प्रचलित है. लोग जीने-खाने के लिए कुछ न कुछ करते ही रहते हैं, किन्तु जीवात्मा को परमात्मा से मेल करा देने वाला नियत कर्म ही गीतोक्त कर्म है. स्वामी जी इस संकलन के लिए आलम साहब की तारीफ करते हुए कहा कि सच्चा कवि वही है जो अपनी रचना द्वारा दूसरों को भी 'राहे-हक़' पर चलने के लिए प्रेरित करें. परमध ाम तक पहुँचने के लिए नाम का जाप और कर्मपथ पर आरूढ़ होना आवश्यक है. जैसा कि आलम साहब के शेर में भी गीता की ही बात परिलक्षित होती है-

'क्या लगी सोचने आजकल ज़िन्दगी,
तौर अपना जरा तू बदल ज़िन्दगी।
मुश्किलें पल में आसान हो जायेंगी,
जब पकड़ लेगी राहे अम़ल ज़िन्दगी।।

प्रसिद्ध साहित्यकार डॉ. मधुर नज्मी ने कहा कि 'राहे-हक़' रूहानियत और रूमानियत के रंगों से सराबोर ग़ज़ल कृति है. इसमें आलम साहब की शाइरी का सूफी दर्शन है.

समारोह की अध्यक्षता कर रहे बहुमुखी प्रतिभा के धनी हिन्दी के विद्वान डॉ. विवेकी राय ने कहा कि शायर मुनीर बख्श 'आलम' की ग़ज़लों के संकलन 'राहे-हक़' के भीतर से गुजरना एक सुखद अनुभव है. उसमें ग़ज़ल की शैली-शिल्प का विधिवत निखार है और इस सीमा के बाद उसमें हिन्दी परम्परा, दुष्यन्त कुमार और उनके बाद के हिन्दी ग़ज़लकारों की परम्परा का प्रवाह स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ता है.

रचनाकार मुनीर बख्श आलम ने इसे स्वामी अड़गड़ानंद जी महाराज की कृपा का परिणाम बताया. उन्होंने कहा राहे हक़ का मतलब ईश्वर-पथ है और राहे-हक़ की अधिकतम ग़ज़ले भगवान की असीम सत्ता की अज़ीम रौशनी के एहसासात है.

इस मौके पर अजय शेखर, डॉ. शकुन्तला राय, डॉ० अर्जुनदास केशरी, शेख जैनुल आब्दीन, प्रेमनाथ चैाबे, शिवेन्द्र सिंह, जगदीश पंथी, ईश्वर विरागी, मिश्री मधुप, राजेश द्विवेदी, डॉ० कुसुमाकर, विनोद श्रीवास्तव, आर.पी. दूबे, दीनदयाल पाण्डेय, पंकज राय, सुरेन्द्र कुमार सिंह, एम.पी.सिंह, रामप्रसाद यादव आदि साहित्यकार, पत्रकार एवं बड़ी संख्या में भक्तगण मौजूद थे.

ग्यारहवें अ.भा.प्रतिष्ठापूर्ण अम्बिाप्रसाद 'दिव्य' पुरस्कारों हेतु प्रवृष्ठियॉ आमंत्रित

यशस्वी उपन्यासकार, कवि, चित्रकार एवं साठ महत्वपूर्ण ग्रंथो के सर्जक स्व. अम्बिकाप्रसाद 'दिव्य' की स्मृति में साहित्य सदन द्वारा अनेक वर्षो से कई साहित्यिक पुरस्कार प्रदान किये जा रहे हैं. वर्ष २००७, दिव्यजी का शताब्दी वर्ष होने के कारण, पुरस्कारों की संख्या एवं राशि में भी वृद्धि की गई है.

उपन्यास विधा हेतु : पॉच हजार रुपये **कहानी विधा हेतु : दो हजार एक सौ रुपये**
काव्य विधा हेतु : दो हजार एक सौ रुपये **बाल साहित्य हेतु : दो हजार एक सौ रुपय**
नाटक, व्यंग्य, ललित-निबंध,पत्रकारिता एवं दिव्य साहित्य पर शोध : दो हजार एक सौ रुपये
अन्य विधाओं की श्रेष्ठ कृतियों पर, साहित्यिक पत्रिकाओं सहित : दिव्य रजत अलंकरण

राष्ट्रीय ख्याति के ग्यारहवें प्रतिष्ठापूर्ण साहित्यिक दिव्य पुरस्कारों हेतु जनवरी २००४ से दिसम्बर २००६ के मध्य प्रकाशित पुस्तकों, साहित्यिक पत्रिकाओं (के दो अंको) की तीन-तीन प्रतियॉ, प्रत्येक प्रविष्ठि के लिए सौ रुपये प्रवेश शुल्क, लेखक, संपादक के दो रंगीन चित्र, *३० सितम्बर २००७ तक साहित्य सदन, द्वारा श्रीमती राजो किंजल्क, सी-५, आकाशवाणी कालोनी, सिविल लाइन्स, सागर-४७०००१, म.प्र.* के पते पर पहुँच जाना चाहिए. हिन्दी साहित्य जगत में अत्यधिक लोकप्रिय, विश्वसनीय एवं राष्ट्रीय स्तर पर चर्चित दिव्य पुरस्कारों हेतु प्राप्त पुस्तकों, साहित्यिक पत्रिकाओं का चयन एक निर्णायक मण्डल द्वारा किया जायेगा. उनका निर्णय अंतिम तथा मान्य होगा. पुरस्कार हेतु प्राप्त पुस्तकें, पत्रिकाएं लौटायी नहीं जाएगी. पुस्तकों के किसी भी पृष्ठ पर पेन से कोई शब्द न लिखें. ये पुरस्कार सागर में आयोजित एक गरिमापूर्ण साहित्यिक समारोह में यथा समय प्रदान किये जायेंगे.

गीता का भक्ति योग

कैलाश त्रिपाठी, औरैया, उ.प्र.

'बहुजन हिताय बहुजन सुखाय' अनादि अनन्त भगवान् श्रीकृष्ण की दिव्य वाणी श्रीमद भगवद्‌गीता के अनुसार कर्मयोग, ज्ञान योग, एवं भक्ति योग तीनों ही भगवत प्राप्ति के साधन हैं. यद्यपि ये तीनों साधन स्वतंत्र है, तथापि इनमें से किसी एक साधन के सिद्ध हो जाने पर शेष दो साधन भी स्वतः सिद्ध हो जाते है. भगवान कहते है कि-अनन्य भक्ति से मैं तत्व में जाना जा सकता हूँ. (गीता ११/५४) आशय यह है कि भक्ति से ज्ञान योग भी स्वतः सिद्ध हो जाता है. व्यक्ति अपनी प्रवृत्तियों के अनुसार ज्ञान, कर्म और भक्ति में किसी एक का निष्ठापूर्वक आश्रय लेकर अपना अभीष्ट सिद्ध कर सकता है. गीता में ज्ञान योग एवं कर्मयोग के साथ भक्ति के विभिन्न रूपों पर भी पर्याप्त प्रकाश प्रक्षेपण किया गया है. गीता भगवान की ऐसी अद्‌भूत वाणी है कि इसमें अपनी चित्तवृत्तियों के अनुरूप कोई ज्ञान योग की प्रमुखता देखता है, कोई कर्मयोग की तथा कोई भक्तियोग की. यहॉ गीता में निहित भक्ति तत्व की ओर सांकेतिक ध्यानाकर्षण अभीप्सित है.

गीता के अनुसार भक्ति का एक रूप वह है जिसमें क्रिया और भाव दोनों भगवद्‌विषयक हों. यथा-जप-ध्यान, पूजा-पाठ, सत्संग-स्वाध्याय, श्रवण-मनन आदि क्रियायें भगवत्सम्बन्धी है और उनको करने में भगवद्‌भाव भी है. (गीता १०/८-६) भक्ति का दूसरा रूप वह है जिसमें कर्त्तव्य निर्वहन हेतु सांसारिक क्रियायें-परिवार का पालन-पोषण, जीविकोपार्जन आदि भगवद्‌भाव से सम्पन्न की जायें. (गीता ६/२७,१८/४६, ३/३०)

मनीषियों ने अपने-अपने चिन्तनों एवं अनुभूतियों के आधार पर भक्ति को विभिन्न प्रकार से परिभाषित किया है. नारद भक्ति सूत्र में नारद ने भक्ति को परम प्रेम रूप बताया है-'सा त्वीस्मन पर प्रेम रूपा' (नारद भक्ति सूत्र) शाण्डिल्य ने ईश्वर में परानुरक्ति को भक्ति माना है. 'सा परानुरक्तिरीश्वरे' (भक्ति सूत्र १/२) भागवत में परानुरक्ति का अभिप्राय निर्हेतुक, निष्काम तथा निरन्तर प्रेम बतलाया गया है. 'अहैतुक्यव्यहृता या भक्तिं पुरूषोंत्तयें (३/२६/१२) भक्ति की संदर्भित परिभाषाओं के आलोक में ऐसा प्रतीत होता है कि भक्ति एक हृदयगत भाव है. इस भाव, मनोदशा या अवस्था तक पहुँचने के लिए साधकों द्वारा जिन-जिन साधनों का आश्रय लिया जाता रहा है उन्हें भी भक्ति अथवा भक्ति के अंगो के रूप में स्वीकार लिया गया यथा-नवधा भक्ति. चाहे वह श्रीमद्‌भागवत की नवधा भक्ति हो या रामचरित मानस की. यह सब साधन मनुष्य के मन को उस विशिष्ट भाव या निर्मल अवस्था में ले जाने तथा अवस्थित करन में सहयोगी हैं जिसे भक्ति कहा जाता है. गीता में अनन्य भक्ति का जो स्वरुप दर्शाया है-उसमें साधक, पच्चक के निरुपण में भी यही तथ्य अन्तर्निहित प्रतीत होता है.

मत्कर्मकृन्मत्परमो मभ्दक्तः सङ्गवर्जितः।
निर्वैरः सर्वभूतेषु यः स मामेति पाण्डव।।
गीता ११/५५

शंकराचार्य ने अपने भाष्य में गीता के इस श्लोक को 'सर्वार्थ सार' अर्थात सम्पूर्ण गीता का सार कहा है. गीता के इस श्लोक में भक्ति भाव के लिये पॉच बातों का आश्रय लेने हेतु कहा गया है. जिन्हें मनीषियों द्वारा साधन पच्चक की संज्ञा दी गई है. इन पॉच बातो के दो विभाग है १. भगवद्‌विषयक रति २. लौकिक विरति. पहले विभाग में 'मत्कर्मकृत', 'मत्परमः' और 'मद्धक्तः' ये तीन बाते हैं और दूसरे विभाग में 'सङ्गवर्जित', 'निर्वैरः सर्वेभूतेषु' ये दो बाते हैं.

१. 'मत्कर्मकृत' का तात्पर्य है समस्त कर्मो को भगवान् को अर्पित कर देना. जो जप, कीर्तन, ध्यान, सत्संग, स्वाध्याय आदि भगवद्‌विषयक कार्यो का तथा अन्य लौकिक कर्त्तव्य कर्मो का भगवत्‌परायण होकर करता है, वह मत्कर्मकृत्‌ है.

२. 'मत्परमः' का भाव यह है कि जो भगवान को सर्वस्व मानकर उनके परायण रहता है अर्थात जिसके परम ध्येय, परम आश्रय एक मात्र भगवान हैं. जो पूरी तत्परता से भगवान को प्राप्त करने के लिए कर्म करता है उसे ही भगवान ने 'मत्परमः' कहा है.

३. 'मद्‌भक्तः' पद का अर्थ है जो केवल मेरा ही भक्त है. जिसका मेरे प्रति अतिशय प्रेम है. जिसने यह सुनिश्चत कर लिया है कि मैं भगवान का हूँ और भगवान मेरे है.

४. सङ्गवर्जितः अर्थात सम्पूर्ण प्राणि और पदार्थो में आसक्ति रहित होना. भगवान्‌ को छोड़कर जिसका कहीं और किसी में किंचित मात्र प्रेम न हो, वह सङ्गवर्जित है. ऐसे व्यक्ति की संसार में आसक्ति, ममता और कामना नहीं रहती.

५. 'निर्वैरः सर्वभूतेषु' प्राणि मात्र के प्रति द्वेष या बैर भाव का सर्वथा अभाव. 'अद्वेश सर्वभूतानाम्' अर्थात सर्वत्र भगवद्‌भाव होने से किसी के प्रति किंचित मात्र भी वैरभाव का

उत्पन्न न होना 'निर्वैरः सर्वभूतेषु' कहा जायेगा.

सन्दर्भित पॉच साधनों का आश्रय लेकर साधक उत्तरोत्तर जिस भाव की ओर अग्रसर होता है वह भाव ही भक्ति है. जो यथार्थतः भक्ति भाव में पहुँच जाता है, वह भगवान् को ही प्राप्त हो जाता है-'स मामेति'. यह है गीता में भक्ति का स्वरुप. जिसके सांकेतिक सूत्र गीता में यत्र-तत्र समाहित दिखाई देते हैं. गीता के छठवें अध्याय में भगवान् कहते हैं कि जो पुरूष सम्पूर्ण भूतों में सर्वात्मरुप मुझ वासुदेव को व्यापक देखता है, उसके लिए मैं अदृश्य नहीं होता और वह मेरे लिये अदृश्य नहीं है. तथा जो पुरुष एकात्मभाव में स्थित होकर सम्पूर्णभूतों में आत्मरुप से स्थित मुझ सच्चिदानंदघन वासुदेव को भजता है. वह योगी सब प्रकार से बरतता हुआ भी मुझमें बरतता है. (३०-३१)

इसी प्रकार-जो श्रद्धावान मुझमें लगे हुए अन्तरात्मा से मुझको निरन्तर भजता है, वह योगी मुझे परम श्रेष्ठ मान्य है.(४७) गीता के इन श्लोकों में मूलतः भक्ति का प्रतिपादन तो है ही भक्त को श्रेष्ठ भी माना है. ज्ञान योग, कर्म योग के प्रसंग में जहॉ अर्जुन का भक्ति विषयक प्रश्न ही नहीं है, भगवान् ने अपनी ओर से सांकेतिक रुप में भक्ति की बात भी कह दी है. जैसे-द्वितीय अध्याय के कर्मयोग प्रसंग में भगवान 'मत्परः' पद से अपने परायण होने हेतु कहते हैं.

केवल एक सर्वशक्तिमान परमश्वेर को ही अपना स्वामी मानते हुए स्वार्थ और अभिमान का त्याग करके श्रद्धा और भाव सहित प्रेम से भगवान का अनवरत चिन्तन करने को अव्यभिचारिणी भक्ति को भी ज्ञान के अन्तर्गत ही माना है. (१३/१०-११) और आगे यह भी स्पष्ट कर दिया है कि जो पुरूष अव्यभिचारिणी भक्ति योग द्वारा मुझको निरन्तर भजता है, वह सत्त्व-रज-तम इन तीनों गुणों को भली भॉति लांघकर सच्चिदानन्दघन ब्रहम को प्राप्त होने के योग्य बन जाता है.

मां च योऽव्यभिचारेण भक्तियोगेन सेवते।
स गुणान्समतीत्यैतान्ब्रहमभूयाय कल्पते।।
गीता १४/२६

गीता के भक्तियोग में ज्ञानयोग और कर्मयोग भी समाहित है. यथा-जो अव्यभिचारी भक्तियोग से भगवान् का चिन्तन करता है वह मनुष्य ऐसे ही गुणातीत हो जाता है जैसे ज्ञान योग से. भक्तियोग निष्काम कर्म में सहायक है क्योंकि भक्त अपनी परिस्थितियों से संतुष्ट रहकर, भगवान का चिन्तन करते हुए अपने कर्त्तव्यों का पालन करता है तथा उसमें कर्मफल के प्रति आसक्ति नहीं होती. अठारहवें अध्याय में 'स्वकर्मणा तमभ्यर्च्य' -४६, 'मद्धक्ति लभते पराम्' ५४, तथा 'भक्त्या मामभिजानाति-५५, पदों में भी भक्ति की बात कही गई है. गीता में ज्ञान योग से पराभक्ति-प्रेम की प्राप्ति और कर्मयोग से ज्ञान की प्राप्ति बताई गई है, परंतु भक्ति से भगवान के दर्शन, भगवतत्व का ज्ञान और भगवतत्तव में प्रवेश ये तीनों हो जाते है. स्वामी रामसुखदासजी श्रीमद्भागवत् की नवधा भक्ति के सूत्र प्रकारान्तर से गीता में अन्तर्निहित देखते है. जैसे-

१. श्रवण-जो मनुष्य तत्त्वज्ञ जीवन्मुक्त महापुरूषों से सुनकर उपासना करते हैं, ऐसे वे सुनने के परायण हुए मनुष्य मृत्यु को तर जाते हैं. १३/२५

२.कीर्तन-भक्त प्रेम पूर्वक मेरे नाम, रूप, लीला आदि का कीर्तन करते है. (६/१४)

३. स्मरण-जो मनुष्य अनन्यचित्त होकर नित्य-निरन्तर मेरा स्मरण करते हैं (८/१४)

महात्मा लोग अनन्य होकर मेरा स्मरण करते हुए मेरी उपासना करते है. (६/१३)

४.पादसेवन-भक्त प्रेम पूर्वक मुझे नमस्कार करते हुए मेरी उपासना करते है. (६/१४)

५.अर्चन- जिससे सम्पूर्ण प्राणियों की उत्पत्ति हुई है और जो सबमें व्याप्त है उस परमात्मा का अपने कर्मा द्वारा अर्चन करके मनुष्य सिद्धि को प्राप्त हो जाता है. (१८/४६)

६.वन्दन-तू मेरे को नमस्कार कर, फिर तू मेरे को ही प्राप्त होगा. (६/३४,६/६५) हे प्रभो आपको हजारों बार नमस्कार हो! नमस्कार हो! और फिर आपको बार-बार नमस्कार हो! नमस्कार! (११/३६)

७. दास्य-तू मेरा भक्त हो जा, फिर तू मुझे ही प्राप्त होगा.(१८/६५) हे कृष्ण! मैं आपका शिष्य हूँ. (२/६)

८.सख्य-तू मेरा प्रिय सखा है. (४/३); हे कृष्ण! जैसे सखा सखा के अपमान को सह लेता है अर्थात् क्षमा कर देता है, ऐसे ही आप मेरे द्वारा किये गये अपमान को सहने में समर्थ हैं. (११/४४)

६. आत्म निवेदन-उस आदि पुरूष परमात्मा की ही शरण में हो जाना चाहिये. (१५/४)

इस प्रकार गीता में कर्मयोग एवं ज्ञानयोग के साथ-साथ भक्तियोग पर भी यथेष्ट प्रकाश डाला गया है. जिसकी परिपूर्णता 'मामेकं शरणं ब्रज' में दिखाई देती है.

भाग्य दर्पण मासिक
संपादकःडॉ. इकबाल अहमद मंसूरी, भानपुरी, खजुरिया, जिला–खीरी, उ0प्र0

ओस का कफन

✍कु० श्रद्धा, मुबई

"मान जा मेरे बेटा. वह तो एक चर्चित वैश्या है और किसी वैश्या को घर में रखना तो घर में सॉप पालने के समान है."

"खबरदार मॉ.... उसके चरित्र के बारे में एक भी शब्द यदि तुमने और कहा तो तुम्हारी जुबॉ खींच लूंगा... तुझे तो हर कोई वैश्या ही नजर आती है... लगता है कि बुढ़ापे के साथ-साथ अब तेरा दिमाग भी बूढ़ा हो गया है"

"मेरे लाल! यह सब कुछ मै इसलिये कह रही हूँ कि इन वैश्याओं की दुरंगी चाल का तुझे अभी तक अनुभव नहीं है. इस तरुपाई ने तेरी अक्ल पर पर्दा डाल दिया है. तूँ नहीं जानता कि इस प्रेम की ऑधी में बड़े-बड़े पेड़ उखड़ जाते है. मैंने दुनिया देखी है जबकि तुझे अभी बहुत कुछ देखना और सीखना है, बेटा. केवल मैं ही यह बात नहीं कहती बल्कि मौहल्ले भर में चर्चा है कि वह नेक विचारों वाली नहीं है. "

"मॉ, दुनिया गई भाड़ में. उससे भला हमें क्या लेना-देना. दूसरों पर कीचड़ उछालने के सिवाय लोगों के पास भला अब है ही क्या? दुनिया क्या हमें खाने को देती है कि जो हम उसकी परवाह करें? उसने भला कब और किसका सुख चाहा है..... किसी का घर आबाद कराना तो रहा दूर, यह तो किसी का बनता काम भी बिगाड़ने को तैयार बैठी है. समझ में नहीं आता कि उससे शादी मुझे करनी है या दुनिया को. और हॉ. इतनी समझदार होते हुए भी तुम इनकी बेकार बातों पर विश्वास कर आज कैसी बातें करती हो? तुम क्या जानों कि वह कितनी गुणवान लड़की है?"

"बेटा तू नहीं समझ रहा है. मेरी बात को. मैं तूझसे आखिरी बार कह रही हूं. मैं जीतेजी तूझे उससे शादी नहीं करने दूंगी."

"मॉ, चाहे जो भी मैं उससे शादी करूंगा."

वह यह बात जाकर उस लड़की बताता है कि उसकी मॉ जीतेजी शादी करने को तैयार नही है. वह लड़की कही-"क्या तुम मेरे लिए इतना नहीं कर सकते. पहले समझाने का प्रयास करों और अगर नहीं समझती है तो...."

लड़के पर उस लड़की के प्यार का इतना भूत सवार था कि वह सोचा क्यों न मॉ को ही खत्म कर दें. न रहेगी बॉस न बाजेगी बॉसूरी. वह उसी धून में अपने घर गया और अपनी मॉ सिर धर से अलग कर, कटे हुए शीश तथा खून से रंगी कटार को थैले में डालकर तुरन्त अपनी प्रेमिका के घर की ओर दौड़ने लगा. अभी वह थोड़ी दूर गया था कि अन्धेरे में एक पत्थर से ठुकरा कर वह ऐसा गिरा कि झोला भी नीचे जा गिरा. तभी युवक को ऐसा आभास हुआ कि मानों वह कटा हुआ शीश यह कह रहा हो कि बेटे उठ. कहीं तुझे चोट नहीं आई...? लड़के ने फिर झोला उठाया और प्रियतमा की ओर हो लिया.

"दिलरुबा, झोला खोलो और देख लो कि तुम्हारी चाहत में मॉ का शीश भी हाजिर है... अब तो ढह गई दीवार. .. रच लो विवाह."

"ओह बेशर्म, निर्लज्ज. तुमने तो सचमुच ही अपनी मॉ का शीश उड़ा दिया... तेरे ये हाथ टूट क्यों नहीं गये? बुढ़िया पर वार करके कहॉ की मर्दानगी प्राप्त कर ली...जब तू अपनी सगी मॉ का नहीं तो मेरा क्या होगा. कल तूं मुझ से भी सुन्दर युवती के कहने पर मेरा भी शीश उड़ा सकता है... हत्यारे.. दूर हो जा मेरी ऑखों के सामने से.. तुमसे अब मेरा कोई एतबार नहीं."

लड़की से उत्तर पाकर वह युवक आग बबुला हो गया. झोले से झट वही खूनी कटार निकाल कर उसने युवती पर आठ-दस कातिलाना प्रहार तुरन्त कर डाले. यदि वह चाहता तो वहॉ से भाग भी सकता था क्योंकि उस कोहरे भरी अन्धेरी और ठण्डी रात में उस समय वहॉ कोई नहीं था. कोई होता तो भी उसे कोई भय नहीं था क्योंकि जिनके लिए उसे जीना था, जब वह ही नहीं रहे तो जीकर वह अब करेगा भी क्या? यही सोचकर अपनी मॉ के शीश को सिर नवा और पुड़िया में रखी विषैली दवा खाकर तत्काल ही अपने शरीर पर भी उसी चाकू से प्रहार करके बहती रक्तधार का कुछ खून सिन्दूर के रूप में मृत प्रेमिका की मॉग में लगाकर घटनास्थल पर ही कटे पेड़ के समान धड़ाग से गिर पड़ा और सूर्योदय होने तक उसकी इह लीला भी समाप्त हो गई.

भोर में जब लोगों ने कौवे और गीध जैसे पक्षियों को कुत्तों के साथ छीना-झपटी करते हुए देखा तो भीड़ के कफन के रूप में प्रकृति द्वारा ओस और कुहासे ओढ़ाई गई प्राकृतिक चादर में लिपटे हुए ही उन्हें पाया.

रुपाणा टाईम्स
संपादकः श्री सुभाष रुपाणा
२२-३, सुरजीत सिंह कॉलोनी,
श्री गंगानगर

कहानी

मजदूर का बेटा

✍नन्दलालराम भारती, इंदौर, म0प्र0

बलवीर काका खेतिहर मजदूर थे. पैतृक खेतीबारी की जो भी जमीन थी, जमीदारी के जमाने में ही दंबंग लोगो ने ह ड़प लिया था. बलवीर काका के रहने तक का ठिकाना नहीं था. पैतृक सम्पत्ति के नाम पर एक टूटा फूटा घर था. उसे भी परिवार के लोगो ने हड़प लिया था. बेचारे बलवीर काका गांव समाज की जमीन पर छोटा सा खपरैल का घर बनाकर अपने परिवार के साथ गुजर बसर कर रहे थे. जीविकोपार्जन के लिये जमीदार के खेतों में मजदूरी करते थे. देश को आजादी मिल गयी थी पर बलवीर काका को पता हीं नहीं था कि आजादी कैसी होती हैं. उनके बाप आजादी के पहले ही गायब हो गये थे, ना जाने उन्हें जमीन निगल गयी या आकाश. कोई खबर नहीं लगी थी कि जीवित है या मर गये या आजादी के काम आ गये. कुछ पता नहीं चला. बस इतना पता था कि वे कमाने के लिए शहर गये थे. बाकी कुछ पता नहीं चला किसी को कभी भी. बलवीर काका के पास खाने वाले भी अधिक हो गये थे कुल मिला कर सात बेटे बेटियां और दो पति पत्नी खुद बलवीर काका यानि नौ लोगों का परिवार और एक अंधी भाभी कुल मिलाकर दस लोग थे. पर आमदनी के नाम पर कोई पुख्ता इंतजाम नही. बलवीर काका और उनके परिवार का जीवन अभाव में ही बित रहा था, पर उन्हें आशा थी कि एक ना एक दिन उनके भी दिन आयेगें. वे बेटवा को लेकर काफी आशान्वित थे कि उनका बेटा बड़ा होकर सब तकलीफों को हर लेगा एक दिन. बलवीर और उसका परिवार अभावग्रस्त जीवन यापन करते हुए भी खुश था. बलवीर और उसकी पत्नी नरेश की पढ़ाई का भरपूर ख्याल रखते थे अनपढ़ होकर भी.

नरेश पढ़ाई लिखाई में होशियार था. स्कूल की पढ़ाई में अव्वल था. स्कूल से आने के बाद घर का काम धंधा निपटा कर पढ़ने बैठ जाता था. हां बकरी गाय भैस जब चराने जाता तो किताब कापी भी साथ लेकर जाता पढ़ने के लिए. बलवीर काका की पत्नी सम्पति देवी भी बहुत मेहनती थी. उसकी मेहनत के फलस्वरुप ही दरवाजे पर गाय, भैस, बकरी बंधे थे. इन्हीं के भरोसे कपड़ा लत्ता, न्यौता हंकारी का काम चल जाता था. सम्पति देवी कहती अरे गाय भैस पालने के लिए मेहनत जरुरी है. वही बेचारी चारा आदि का बन्दोबस्त करती थी चाहे सूखा या बाढ़. बलवीर काका को तो जमीदार के काम से ही नहीं फुर्सत मिलती थी, रात दिन लगे रहते थे. बलवीर काका से गाय भैस थर्र थर्र कांपते थे. जरा सी कोई जानवर गड़बड़ की तो खैर नहीं. जीभ निकाल कर केहुनी से मारते थे, जानवरों को. अगर कसकर एक केहुनी किसी जानवर को चाहे भैस हो या बैल मार दिये तो वह जानवर भी जीभ निकाल कर जमीन पर बैठ जाता था.

बलवीर काका की गृहस्ती अभावग्रस्त स्थिति से गुजर रही थी पर वे हंसी खुशी से जीवन बिता रहे थे. इसी बीच अचानक सम्पति देवी की तबियत खराब हो गयी. अस्पताल में भर्ती करना पड़ा. पेट का बड़ा आपरेशन हुआ. आर्थिक संकट और गहराता जा रहा था. गाय भैस बिकने लगे. सम्पत्ति देवी को आपरेशन के बाद कुछ आराम हुआ. इसके बाद छोटा बेटा मुन्ना बीमार हो गया. उसे भी अस्पताल में भर्ती करवाया पर वह नहीं बचा. भगवान को प्यारा हो गया. अब बलवीर के परिवार पर मुसीबत का पहाड़ गिर चुका था. नरेश की पढ़ाई में भी व्यवध ाान आने लगा था. एक दिन स्कूल से आने के बाद नरेश जमीदार के खेत से धान ढो रहा था. संयोगवश बड़े जमीदार के भाई खुशीबाबू जो सेना में थे, आए हुए थे, वे भी खेत पर पहुंच गये. नरेश ने खुशीबाबू का पैर छुआ.

खुशीबाबू-नरेश ने पूछे नरेश स्कूल नहीं जाता है क्या?

नरेश-चाचाजी जाता तो हूं. अभी स्कूल से ही तो आया हूॅं और आपका धान ढो रहा हूॅं. इससे मां की थोड़ी मदद हो जायेगी ना अकेले कब तक ढोयेगी.

खुशीबाबू-नरेश कौन सी क्लास में पढ़ता है अब.

नरेश-चाचाजी दसवी में आ गया हूॅं.

खुशीबाबू- अरे बलवीर क्यों तुम रोते रहते हो. तेरा बेटा दसवी में पढ़ रहा है मेरा पांचवी भी नहीं पास कर पा रहा है. अब तो लगता है नरेश ही मेरे बेटों को पढ़ायेगा. शाबास नरेश लगन से पढ़ाई करो तुमको जरूर बढ़िया सी नौकरी मिल ही जायेगी. तू अपने मां-बाप का नाम रोशन करेगा.

बलवीर-आज तो पेट भरने को लाले पड़ रहे है. देख रहे हो बाबू बेटवा स्कूल से आकर मजदूरी में लग गया है क्या पढ़ेगा.

खुशीनाथ-मजदूरी करना कोई बुरी बात तो है नहीं. कहा चोरी कर रहा है. बलवीर बेटवा में पढ़ने की ललक है. एक दिन जरुर बड़ा आदमी बनेगा. मैं भी तब इसका सलाम करूंगा. बलवीर नरेश तुम्हारा और इस गांव का नाम रोशन करेगा मेरा आर्शीवाद है. मैं शाम की बेला में कह रहा हूॅं मेरी बात खाली नहीं जायेगी देख लेना. तब तक

नरेश धान का बोझ खलिहान में रखकर आ गया. खुशीबाबू कई सवाल पूछे. नरेश सब सवालों का जबाब धड़ाधड़ देता चला गया. नरेश धान का बोझ लेकर चला गया पुनः.

खुशीबाबू-अरे बलवीर तुम्हार बेटवा तो पढ़ने में बहुत तेज है.

बलवीर-होगा, बाबू हमें का मालूम. हम तो करिया अक्षर भैस बराबर. हमें क्या पता अनपढ़ गंवार को. सभी ऐसा ही कहते हैं. सब से सुनकर मेरा भी मन खुश हो जाता है. देखो मेरा भी सपना उपर वाला कब पूरा करता हैं.

खुशीबाबू-बहुत खुशी की बात है तेरा बेटा बलवीर पढ़ने में होशियार है. इसकी पढ़ाई का ख्याल रखना. मेहनत मजदूरी में कम लगाया करना. पढ़ने ज्यादा दिया करना.

बलवीर-बाबू मजदूर का बेटा है. मजदूरी नहीं करेगा तो पेट कैसे भरेगा. कितनी मजदूरी मिलती है आप भी जानते हो. एक आदमी की कमाई वह भी खेतिहर मजदूर. परिवार को रोटी भी तो नहीं मिल पाती है. सीजन में जरा हाथ बंटा देता है. कुछ मजदूरी ज्यादा मिल जाती है. साल भर खाने के लिए भी तो चाहिये ना. इसी मेहनत मजदूरी से सब देखना है बाबू.

खुशीबाबू-मेहनत मजदूरी करना कोई बुरी बात नहीं है पर इससे तो बेटवा की पढ़ाई तो प्रभावित होती है.

बलवीर-बाबू मुझे भी शौक नहीं है मजदूरी करवाने की पर क्या करूं मजबूरी जो ठहरी. बलवीर और खुशी बाबू बातचीत कर ही रहे थे कि नरेश बोझ खलिहान में रखकर आ गया.

खुशीबाबू-नरेश बहुत जल्दी आ गया.

नरेश-चाचा रात हो रही है ना. मां घर जायेगी तभी तो रोटी बनेगी. अभी बीस बोझ है ढोने को देख ही रहे हो. सात साढ़े सात तो बजने ही वाला होगा. आठ साढ़े आठ बजे तक सब ढोना है मुझे.

खुशीबाबू-ठीक है धान ढो लो आज, कल मुझसे मिल लेना.

नरेश-ठीक है चाचा कल शाम को तो धान नहीं ढोना है. कल शाम को आपका गन्ना छिलना है. जब गन्ना छिलने आऊंगा तो गन्ना छिलकर पेराई मशीन तक रखने के बाद आप से मिल लूंगा. चाचा आप से मिल कर ही घर जाऊंगा.

खुशीबाबू-ठीक है नरेश. तुम को जब भी समय मिले तब मिल लेना. बेटा पढ़ाई पर ध्यान रखना देख तेरे बाबू कितनी उम्मीद अभी से लगा बैठे है. इनकी उम्मीद को पूरा करने का कठिन प्रयास करना.

नरेश-जी चाचा.

नरेश दूसरे दिन शाम को स्कूल से पढ़कर आया किताब कापी घर में रखा. इसके तुरन्त बाद जमीदार का गन्ना छिलने चला गया. गन्ना छिलकर पेराई वाली मशीन तक ढो ढो कर पहुचाया. गेंडा, गन्ने की हरी पत्तियां जो चारा के काम आती है का बोझ अपने घर लाया चारा काटा. जानवरों का सानी पानी करके. खुशी-खुशी खुशीबाबू से मिलने हवेली गया.

नरेश को देखकर खुशीबाबू बोले आ गये नरेश.

नरेश- हा चाचा आ तो गया. कहियें क्यों बुलाये हैं.

खुशीबाबू-नरेश तेरे बापू रघुवीर बोल रहे थे कि पैसे की बहुत तंगी है.

नरेश-चाचा आपको तो मालुम ही है, मां बाप खेतिहर मजदूर है. इस मजदूरी से इतनी आय तो होती नहीं. सेर भर दो सेर में क्या खायेगे, क्या बचायेगे, क्या दूसरे काम करेगे पर चाचा पेट काट कर सब देखना ही पड़ता है. खैर चाचा छोड़ो. यही खेतिहर बधुवा मजदूरों की व्यथा कथा है. चाचा आप बताओ किस काम के लिए बुलाये हैं.

खुशीनाथ-बेटा नरेश मैं जल्दी ही अपनी नौकरी पर जाने वाला हूं. रींकू, टींकू, रीनू और इनकी मम्मी को गांव में ही छोड़कर. रीकू व टींकू पढ़ाई में बहुत कमजोर हैं. अगर बेटा तुम मेरी मदद कर सको तो शाम को रींकू, टींकू पढ़ाई में बहुत कमजोर हैं. अगर बेटा तुम मेरी मदद कर सको तो शाम को रींकू, टींकू को एकाध घण्टे पढ़ा दिया करो. हां, इसके बदले बीस, पच्चीस रुपये मिल जाया करेगे हर महीने तुमको. इससे तुम्हे भी मदद हो जायेगी और मेरी चिन्ता भी दूर हो जायेगी. बेटा कल से ही मेरे बच्चों को पढ़ाना शुरू कर दो.

नरेश चाचा ठीक हैं. कल शाम को सात बजे के बाद आ जाया करूंगा.

खुशीनाथ-ठीक है बेटा आ जाना.

नरेश-जी चाचा आ जाऊंगा. अब मैं चलूं.

खुशीनाथ-अरे इतनी जल्दी क्या है. अपने शिष्यों से तो मिल कर जाओ. कुछ बातचीत भी कर लो. मेरे बच्चे शहरी हैं. इनको गांव के पुराने रीति रिवाज से परहेज है अभी. हो सकता है ए लोग भी सीख जाये. ठीक ही

करके दर्दो से दोस्ती

हंसके हर एक पल को, मैं जीता चला गया।
और जीने के लिये, ग़म हर एक पीता चला गया।।
हो खुशनुमा हर दिन, इसलिए करके दर्दो से दोस्ती।
हर गहरें जख्म को, मैं पीता चला गया।।
बहुम कम थी खुशियां शायद मेरे मुक्कदर में।
इसलिए दौर खुशियों का जल्दी बितता चला गया।।

जयसिंह अलवारी, बल्लारी, कर्नाटक

कहा जाता है सोहबत का असर तो पड़ता ही हैं पर बेटा मैं समझा दूंगा. नरेश-चाचाजी बुला दो रींकू, टींकू को मिल ही लेता हूं. थोड़ी देर और सही. खुशीनाथ बाबू अपने बच्चें को आवाज देने लगे.

रींकू, टींकू आ गये. खुशीबाबू नरेश से अपने बच्चों का परिचय करवाये और बोले ए अब तुम्हारे गुरु होगें कल से. तुम दोनों को कल से पढ़ाने आयेगा नरेश. इनके साथ शरारत नहीं करना. इसको पहचानते हो ना. अरे अपने रघुवीर का बेटा है. पढ़ाई में बहुत होशियार है.

रींकू, टींकू नीचे सिर झुकाये एक स्वर में बोले पहचानते है पापाजी. नरेश इसके बाद अपने घर चला गया खुशी खुशी.

दूसरे दिन समय पर पढ़ाने पहुंच गया हवेली. खुशीबाबू हवेली के एक कमरेमें कुर्सी मेज लगवा दिये. नरेश रींकू, टींकू को पढ़ाने लगा. नरेश का हवेली आकर पढ़ाना जमीदार साहब के बड़े बेटे उखाड़ बाबू को पसन्द नहीं आया. वह विषधर की भांति फड़फडाने लगा. एक दिन नरेश रीकूं, टींकू को पढ़ा कर जाने लगा. उखाड़ बाबू उसके पीछे-पीछे चल पड़े. कुछ दूर तक फिर सूनसान जगह पर नरेश को रुकने के लिए बोले, नरेश मुड़कर देखा तो उखाड़बाबू. नरेश रूक गया और बोला उखाड़ बाबू आप इतनी टाइम और मुझे बुला रहे हैं क्यों. मुझे घर जाने को हो रही हैं. मुझे पढ़ाई भी तो करनी है. मेरे जानवर अभी हौदी पर ही होंगे उन्हें लगाना भी हैं. जल्दी में हूं कल मिल लूंगा हेवली ही आकर.

उखाड़बाबू-नहीं अभी तुमको मेरी बात सुनना होगा. क्यों रे नरेश अब तुम्हें अपनी पढ़ाई का इतना घमण्ड हो गया है. मुझसे बहानेबाजी कर रहा है. जब से हवेली आकर टयूशन पढ़ाने लगा है, तबसे अपने को बहुत बड़ा ज्ञानी समझ बैठा है.

नरेश-उखाड़बाबू टयूशन मिलिट्री वाले चाचाजी के कहने पर पढ़ाने आता हूॅ. मैं जर्बदस्ती नहीं आता.

उखाड़बाबू-अब तेरी गज भर की जबान तो आरी जैसे चलने लगी है. इस हवेली में चाचाजी की कबसे चलने लगी. क्या जमाना आ गया है. मेरे ही मजदूर का बेटा मेरे ही चचेरे भाइयों को पढ़ाने मेरी ही हवेली में आने लगा है.

नरेश-मैं मजदूर का बेटा हूं तो क्या हुआ. अरे हूं तो इंसान ही ना. उखाड़बाबू देखा जाये तो हर आदमी किसी न किसी का मजदूर तो हैं ही चाहे वह दफ्तर में बैठकर काम कर रहा हो या मेरे मां जैसे खेत खलिहान में. सभी मजदूरी लेते है कुछ सौभाग्यशाली हैं उन्हें हजारों में मजदूरी मिल जाती है. ऊपर से सम्मान भी मिलता है. हां कुछ के मां बाप दुर्भाग्यशाली है जिनको सेर दो सेर मजदूरी मिलती है और अपमान, जाति-पांति का दंश ऊपर से झेलना पड़ता है.

उखाड़ बाबू-नरेश तुम अपनी औकात में बात करो. दो अक्षर पढ़ क्या लिया अपनी औकात भूलता जा रहा है. क्यों भूल रहा है कि तू मेरे बंधुवा मजदूर का बेटा हैं. अरे मै भी तुम्हारी बात को क्यों नहीं समझ रहा हूॅ. अरे मैं समझ गया तुम मुझे गाली दे रहा है, क्योंकि हमारे बाबू जी भी तो सरकारी नौकरी में है. यही ना.

नरेश-उखाड़ बाबू प्याज जितनी छिलोंगे, छिलका ही निकलेगा. अनावश्यक विवाद खड़ा करने से कोई फायदा नहीं होने वाला है. मेरी मां इन्तजार कर रही होगी. मेरे बापू अभी आपकी हवेली का ही काम कर रहे है. क्यों नहीं मुझे जाने दे रहे हो. मुझे अपना काम करने दो. व्यवधान ना डालो.

उखाड़ बाबू-अबे तू व्यवधान की बात कर रहा है. व्यवधान तो तू डाल रहा है. आज के बाद पढ़ाने के नाम पर हवेली में दिखा तो पैर कटवा लूंगा याद रखना.

नरेश-देखो उखाड़ बाबू पढ़े लिखे हो उम्र में मुझसे पांच सात साल बड़े ही होगे. मैं आपकी कद्र करता हूॅ. शराफत से बात कीजिये. पढ़े लिखों की तरह. ठीक है मेरे बापू आपके यहा मजदूरी करते हैं तो क्या हो गया. अरे इंसानियत

अनुत्तरित प्रश्न

पत्थर की
मूरत को
सब पूजते हैं
नौवैद्य चढ़ाते हैं
मगर भूल जाते है
उसी देवता के अंश
हम है जिसके वंश
अपने जीवन दाता को
माता और पिता को
जिनकी अंगुली पकड़कर
कभी चलना सीखा
सिखाते हैं उन्हें
जीने का सलीका
दिखाते हैं आंख
यूं ही बेबात
झल्लाते है
यूं ही बेवजह
नहीं महसूसते
उनके ज़ज्बों को
आंखो से झरे
लहु के कतरो को
क्या इसी दिन के लिए
इन्सान औलाद चाहता है?
बुढ़ापा जवानी से
जवाब मांगता है......

मीरा सिंह 'मीरा',बक्सर,बिहार

और शराफत भी तो कोई चीज होती है.

उखाड़बाबू-अबे तू नींच जाति का मुझे शराफत सीखाने चला है. जल्दी से यहां से भाग जा वरना बहुत बुरा हो जायेगा.

नेरश-उखाड़ बाबू मैं मिलिट्री वाले चाचा के कहने पर पढ़ाने आता हूँ. इसमें मेरा दोष क्या हैं. मैं तो पढ़ रहा हूँ. क्या किसी बच्चें को पढ़ाना दोष है. मैं रीकू, टीकू को पढ़ाने हवेली आता हूँ चोरी करने तो नहीं आता ना. आपको मेरे पढ़ाने का इतना दुख क्यों है. आप चाहते हो कि मैं नहीं आऊं. आपकी और आपके जमीदार के रूतबे की तौहीनी हो रही हैं. मेरे पढ़ाने से क्यों मै मजदूर का बेटा और तथाकथित छोटी जाती का हूं इसीलिये ना.

उखाड़बाबू-हां इसीलिये. अरे जो चाचा ने तुमको एडवांस दिया है मत वापस करना पढ़ाने आज से नहीं आना.

नरेश-उखाड़बाबू चाचाजी ने तो एक नया पैसा अभी तक नहीं दिया है. हां आपने गालियां जरूर दे दी है. विद्यादान के बदले यही आपके हवेली की परम्परा हैं ना और आपका स्वभाव भी.

उखाड़बाबू-नरेश जो भी तू समझ, समझते रहना. न तो मुझे पढ़ाने की कोशिश करना और ना ही आंख दिखाना. आंख दिखाने का परिणाम तो तुम समझ ही गये होगे. अब तो तुम याद कर लो कल से रींकू, टीकू को पढ़ाने नही आयेगा. इसी में तुम्हारी भलाई है. देखो पानी में रहकर मगरमच्छ से दुश्मनी अच्छी नहीं होती. अक्लमंद को इशारा काफी होता है. अगर तुमने भूल से भी दुश्मनी की हिम्मत की तो खांक में मिट जाओगे याद रखना.

नरेश-उखाड़बाबू मैं विद्यादान करने आपकी हवेली आता रहा हूँ. चोरी करने नहीं. यह बात मैंने आपसे पहले ही कह दिया है. दूसरी बात इस टयूशन से हजार दो हजार की कमाई नहीं हो रही है. मैं आपकी हवेली कमाने नहीं आता हूँ कि मेरी नौकरी छिन रही है. हां इससे थोड़ी मेरी पढ़ाई में मदद मिल सकती थी खैर आप जमीदार साहब को पसन्द नही हैं. हम तो सदियों से शोषित, पीड़ित हैं. आज के जमाने भी आप जैसे लोग शोषण ही करना चाहते है सारी मानवता की हदें लांघ कर. जरा सी तरक्की नहीं देखी जाती. षडयंत्र रचे जा रहे है. आज भी आप जैसे लोगो द्वारा. जरा भी मानवता का ख्याल नहीं आता. अरे भगवान से तो डरा करो. मुझे दुख पहुचाकर या हानि पहुंचा कर क्या लाभ होने वाला है. सिर्फ आप अपने अभिमान की खातिर ए सब कर रहे हैं ना. खुद के अभिमान के लिये किसी के हित को रौद देंगे क्या.

उखाड़बाबू-नरेश तुम्हारे लाभ हानि से मेरा कोई वास्ता नहीं है. मेरे भाइयों को क्या कोई पढ़ाने वाला नहीं मिलेगा कि हम तुम छोटी जाति वाले से पढ़वाओगे. आखिरी बार बोल रहा हूँ तू कल से मेरे भाइयों को पढ़ाने नहीं आएगा और हां, मेरे बाबूजी से इस बात की चर्चा नहीं करना.

नरेश-ठीक है उखाड़बाबू नहीं आऊंगा. इतने अपमान के बाद मैं आऊंगा कैसे सोच लिया आपने.

नरेश फिर कभी रींकू, टींकू को पढ़ाने नहीं गया. वह खुद अपनी पढ़ाई में जुट गया तन मन से. नरेश बी.ए. पास कर लिया. उखाड़ बाबू तो जुगाड़ से बारहवी पास कर लिए मगर रींकू, टींकू बूढ़े हो गये पर दसवी पास नहीं कर पाए. इस मलाल से नरेश कभी उबर नहीं सका.

लेखन प्रतियोगिता नं०२

इसमें रचनाकार को दिये गये शब्द पर कविता लिखकर भेजनी होगी. यह केवल १२ से ३५ वर्ष के लिए ही है. प्रथम को विश्व स्नेह समाज की त्रैवार्षिक, द्वितीय को द्विवार्षिक व तृतीय को वार्षिक सदस्यता प्रदान की जाएगी तथा उनकी रचनाओं को प्रकाशित किया जाएगा साथ ही प्रमाण पत्र भी दिया जाएगा.

नियम एवं शर्तेः १.एक रचनाकार को एक ही रचना भेजनी होगी.२.रचनाकार को अपनी रचना कें साथ मोलिकता प्रमाणित करनी होगी.रचना के लिए रचनाकार स्वयं जिम्मेदार होगा.४.निर्णायक मंडल का निर्णय अंतिम एवं सर्वमान्य होगा. ७. रचना के साथ मूल कूपन व जबाबी टिकट लगा लिफाफा लगाना न भूलें. कूपन की कापी स्वीकार्य नहीं होगी.

शब्दः नेताजी

लिखें-संपादक, विश्व स्नेह समाज,
ईनामी प्रतियोगिता न०१, एल.आई.जी.-६३, नीम सरॉ कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद

स्नेह बाल प्रतियोगिता-०२

इसमें ५ से १२ वर्ष की उम्र के बच्चों को नीचे दिए गए विषय पर चित्र बनाकर भेजना होगा. प्रथम आने वाले चित्रकार का सचित्र परिचय, द्वितीय एवं तृतीय आने वाले चित्रकार का परिचय प्रकाशित व प्रमाण पत्र दिया जाएगा.

विषय.झगड़ा मत करो

कूपन लगाना न भूलें

प्रतिभागी का नामः...
पिता का नामः.....................................कक्षाः...................
स्कूल का नामः...
पताः..

प्रिय भैया/बहिनों
आप लोगों को नाटक पढ़ना व देखना तो अच्छा लगता ही होगा. इस बार मैं आजाद दादा का एक गीतों भरा नाटक दे रही हूँ. यह नाटक आप लोगों को पसंद आये तो अपनी बहन को जरुर लिखिएगा.आपकी बहन
संस्कृति 'गोकुल'

आओ सब मिल दीप जलाएँ

डॉ0 सत्यदेव आज़ाद,मथुरा

बालक द्वारा वाचनः दीपावली का पावन पर्व. नगर और ग्राम दुल्हन की तरह सजे हैं. जनमानस में असीम उत्साह, बालकों में अपूर्व उमंग, सर्वत्र उल्लास. लिपे पुते घर आंगन, रंग विरंगें कंडील और पंक्तिबद्ध दीपों की जगर-मगर आखिर क्यों?

बालिका द्वारा वाचन-भगवान राम चौदह वर्षो के बनवास के बाद आज ही तो अवधपुरी वापिस लौटे थे. उन्हीं का स्वागत है. जन मन में सुख की सांस ली. सारा वातावरण झूठ उठा प्रसन्नता से-

!!बालकों की फुसफुसाहट, हँसी किल्लोल के स्वर, बच्चे मिट्टी के दीपक इधर-उधर रखते है!! उभरती हुई सामूहिक गेय स्वर-

दिये जलाती, हमें हँसाती, आई है दिवाली।।
नभ में जगमग करते तारे, जगमग दीपक पास हमारे
पूछे नभ के तारों से हम,तुम से कैसे हम हैं कम
तन की काली,पर उजियाली छाई है मतवाली।
दिये जलाती हमें हँसाती आई दीवाली।।
यह अवसर हम क्यों कर खोये, घर में बद पड़ें क्यो रोये।
बाहर जमें जुआरी बैठे,
बात बुरी है फिर भी ऐठें।
उसे छुड़ाये, जान लड़ाये,
यह टोली बलशाली।
दिये जलाती, हमें हँसाती,
आई है दीवाली।

!सुगम वाद्य संगीत!

मुन्ना के पिता-मित्रों को तुम बैठाओं आदर से,
पूजा करके इन्हें खिलाओ लावा घर से।

माता-हर बच्चा मेरा मुन्ना है प्यारा-प्यारा
अपनी मॉ की और मेरी ऑखों का तारा।

मुन्ना-बैठो भाई. अभी चलेंगे हम सब बाहर
खीर, मिठाई, लाई और बताशे लेकर।

!बच्चों के हँसने, बातचीत करने तथा फुसफुसाहट की आवाजें!

माता-मुन्ना बेटा.चलों करें हम लक्ष्मी पूजन
और साथ ही करें सुघड़ गणपति आराधना

पिता-पूजा करके दें तुमको सुन्दर प्रसाद फिर
खाओं जिसको बड़े स्वाद से नचा-नचा सिर

!मुन्ना पूजा स्थल पर अपने साथियों समेत आ बैठता है और आश्चर्य से सबकी बातें सुनता है!

लड्डू-मैं गणपति के एक हाथ में अति शोभित हूँ।
इसलिये मैं सबसे ऊँचा और पूजित हूँ।।
तुम सब में केवल मैंने ही पाया आदर।
श्री गणेश के कर कमलों में जगह बनाकर।।

!जरा खांसने के बाद पुनः!

तेरा स्वाद न खट्टा, मीठा, लावा. तू क्यों अकड़ा बैठा. पिछी जैसा तन लेकर भी,
यूँ घमण्ड में हैं क्यों ऍठा?

लावा-!क्रोध से! बड़ा गर्व है लड्डू तुझको अपने ऊपर
क्यों इतना इतराता फिरत चलता लूपर
हल्का फुल्का है मेरा तन गोरा गोरा
भोड़ा सा तन लिये बात तू करें छिरोरा।

रोली- बड़े मूर्ख है लड़ते हैं ये जरा जरा सी बात पर
वेला पूजा की, और दीवाली की फिर रात पर

सुपारी-सचमुच, रोली बहिन यदि ऐसे ही लोग लड़ेंगें
तो फिर कैसे यह सब उन्नति के शिखर चढ़ेगे.।

कपूर-इनसे अच्छे हम सब मिलजुलकर रहते हैं
जो संकट आये मिल कर ही सहते हैं।।
यों लड़ना तो बहुत बुरा है बहिन सुपारी।
पर लड़ते ये ऐसे जैसे लड़े जुआरी।।
बात जरा सा झगड़ा इतना भारी भरकम।
इनकी उल्टी सीधी बुद्धि है ही इनसे अच्छे हम।।

केला-तुम सब भी तो उसी भांति बड़ बड़ करते हो
और अधिक अच्छे होने का दम भरते हो।
तुममें उनमें भेद कहॉ है बोलो किंचित
बातें सुनकर तुम सब की मैं हू अति

चिंतित।।
पान-सदा दूसरों के अवगुण पर परदा डालो
मेरे भइया गुण हर थल से ढूंढ निकालो।
और दूसरों पर हंसना, यह बिल्कुल अनुचित
दोष न अपने निरख सके तुम में हूँ बिस्मित।।
लाई- बहुत न हॉकों डींग जरा मुझको भी निरखो
अपने में मत फूलो गुण अब गुण परखो।
गोरी सुंदर सीधी सादी में कम किस में
सभी बतायेंगे गुण मेरे पूछो जिससे।।
बताशा-गोरी गोरी बकती हो क्या मैं हूँ काला
मीठा भी हूँ फूला फूला और मतवाला।
हलका फुलका कहती हो क्या मैं हूँ काला
मीठा भी हूँ फूला फूला और मतवाला।
हलका फुलका कहती हो क्या मैं हूँ भारी
अरे! घास चरने जाती क्या अकल तुम्हारी।।
पैसा-मैं सब को खरीद सकता हूँ व्यर्थ नहीं अटपट बकता हूँ।
यहॉ तुम्हें भी मैं ही लाया किस घमण्ड ने है भरमाया।।
!!मैं बड़ा हूँ, मैं बड़ी हूँ, सबके लड़ने भिड़ने की अस्पष्ट सामूहिक आवाजें!!
गणेश-तुम सबके झगड़े का करता हूँ निपटारा।
शांत रहो मामला साफ़ होता है सारा।।
बोलो! क्या तुम सब मेरी बातें मानोगे।
शांत चित्त हो सही रास्ता पहचानोगे?
!!सम्मिलित स्वर कि हम मानेंगे-हम मानेंगे!! !!संगीत!!
तो तुम सब अपने आसन पर बैठो जाकर
तुम सब तक आयेगा, मुन्ना बेटा सुन्दर
सब से ऊँचा वह, जिसको वह हाथ लगाये
खुश हो मुन्ना सब से पहले जिसे उठाये
मुन्ना-है गणेश जी, मेरा ऐसा हाथ बनाओ
जिससे सबको एक साथ ही मैं समेट लू।
बड़ी मुसीबत है, कुछ अपनी दया दिखाओ
एक एक क्या सब से जी भर खूब भेंट लूँ।।
मेरी मदद करो लक्ष्मी जी संकट भारी
देख सभी को एक भाव मुझमें जगता है।
किसे उठाऊँ कुछ तो जागे बुद्धि हमारी
लावा लाई हर कोई अच्छा लगता है।।
गणेश जी-महत्व सभी का है पूजन में किसे छोड़ दे किसे उठाये।
अतः समझ लो सभी बराबर छोटा बड़ा क्यों मन में आये।
लक्ष्मी वहिन बताओ तो तुम कैसा है यह मेरा निर्णय।।
लक्ष्मी जी-निश्चय ही यह निर्णय देता
सूझ बूझ का सुन्दर परिचय
!!सम्मिलित स्वर!!
मुन्ना भैया के कृतज्ञ हैं हम सब भारी
सबसे बड़े वहीं है जिन से जागी बुद्धि हमारी।
!!पूजा, आरती, घंटा, घड़ियाल, शंख की मिली जुली आवाजें. संगीत धीरे-धीरे उभरता है.!!
दीपों का त्योहार निराला घर-घर भर देता उजियाला।
अंधकार के गहन गले में गूँध दियों के हार।।
बाजारों में रौनक छाई कहीं खिलौने कहीं मिठाई।
छूटी दुष्टा डाह लड़ाई, छाया मधुमय प्यार।
दीपों का त्योहार निराला
घर-घर चमका हुई पुताई मिटी गंदगी हुई सफाई।
शिशु सेना है बन ठन आई, बांधे हुए कतार।।
दीपों का त्योहार निराला
घर-घर लक्ष्मी पूजा माई और राम की महिमा गाई।
लावा लाई और मिठाई लाया साज सॅवार।
दीपों का त्योहार निराला
घर-घर भर देता उजियाला।
अंधकार के गहन गले में
गूँथ दियों के हार।।

रवीन्द्र ज्योति मासिक

लघुकथा, कविता, यात्रा संस्मरण, लघुलेख, समीक्षा, सूचना, साहित्य जगत के समाचार एवं मनोरंजन का अनुपम संचयन।
रचनाकर्मियो एवं प्रबुद्ध जनों के लिए एक अनिवार्यता
१ प्रति २/-रु. वार्षिक २४/-रु. आजीवन २५०/-रु.

नमूना प्रति के लिए २ रु भेजें.

सम्पर्कः डॉ. केवल कृष्ण 'पाठक',
सम्पादक, रवीन्द्र ज्योति मासिक
३४३/१६, आनन्द निवास, गीता कॉलोनी, जीन्द-१२६१०२, हरियाणा
दूर.:०१६८१-२५६१५८ मो.६४१६३८६४८१

आज का एम एल ए

देख भइया फिर से राखी बधवाने आए है।
भइया पॉच साल पर बहनों को मनाने आए है।
वही धवल वस्त्र, वही मुख मुद्रा वैसे ही दॉत निपोरे है।।
ये पिछली कसम फिर से दुहराने आए है। भइया......
पुलिस इनकी लौड़ी है, प्रशासन इनका चाकर है।
बातें इनकी मत पूछो, ये वाणी के वाजीगर है।।
ये फिर वाणी की करतब दिखलाने आए है। भइया....
वादा इनका, ये गुब्बारे वादों के खूब फुलाते हैं।
वोटों की सुई से उनमें छिद्र भी कर जाते है।।
फिर वादों के सपनों में घुमाने आए है। भइया.........
ये होटल, ये बंगले, सब इनकी काली कमाई है।
टूटी झोपड़ी में भूखे मर गए, इनके बाप मताई है।।
गरीबी नहीं, गरीबों को मिटाने आए है। भइया.....
रंग बदलने में ये तो गिरगिट के भी बाप है।
मौका पड़े गदहों से बोलें मेरे बाप तो आप है।
ये फिर हम सबको उल्लू बनाने आए है। भइया....
शहर भर के गुंडे, मवाली इनके चेला चाटी है।
न ये किसी पार्टी के है न इनकी कोई पार्टी है।
ये फिर नोटों के बदले वोट हथियाने आए है। भइया....
पॉच साल में एम एल ए जी ने खूब काम कराए है।
नौ अपहरण, दस हत्याएं बस दो ही दंगे कराए है।
ये मुख की कालिख हमसे धुलवाने आए है। भइया......

डी.पी. उपाध्याय 'मगनजी', बमरौली, इलाहाबाद

पता नहीं

कहां गये रहबर, कुछ पता नहीं
क्यों बंद है दफ्तर, कुछ पता नहीं
सबकुछ उनके हाथ में था फिर भी यारों
खामोश खड़े है अफसर, कुछ पता नहीं
केवल कमी कमजोरी के, ध्यान न जाता कहीं
जबकि मौत खड़ी सर पर, कुछ पता नहीं
बड़ा ही स्वार्थी है, हर मानव आज यहां
कैसे कटेगा जीवन सफर, कुछ पता नहीं
मुश्किल है जीना बहुत, अमीरों के शहर में
भला कैसे होगी गुजर बसर, कुछ पता नहीं
पानी की परेशानी है, खाली पड़े सारे कुंआ
सूखी है कब से नहर, कुछ पता नहीं
मौसम बदला कड़की बिजली, गरज रहा बादल
कब सुधरेगा ये छप्पर, कुछ पता नहीं
मुसीबत में काम जो आये, मानव नहीं वो देव है
ऐसा मुझे कब मिलेगा अवसर, कुछ पता नहीं।
याद बहुत आती है 'यादव' बीती हुई रातों की
चली गई वो क्या कहकर, कुछ पता नहीं।

रामचरण यादव, बैतूल, म.प्र.

प्रयाग-सुयश

१.यज्ञ की भूमि तलासन हित, आये जु ब्रह्मा यही थल माही।
सबही बात को जान सुपास, बुलाय लिए सब देव तहांही।।
बेदी रची प्रतिष्ठान से पुर, समुद्र को कूप रहौ ता माहीं।
पूरन यज्ञ भयो जग के हित, तब से सब लोग प्रयाग कहांही।

२
यमुना उत्तर से आय गई, कच्छप की जु सवारि किये।
जिनकी जुग लीला न जात कही, जल रुप बनी रानी प्रिये।।
गंगा तू तहं पर आय गई, नक्र सवारि कलशाहि लिये।
संगम आन भयौ यह ठौर, सरस्वति दरसैं उर भाव किए।।

३
ब्याह भयौ गंगा को सुनो, शांतनु नृप के संग माहीं।
शर्त रही इक पुत्र जे होंय, देखे न नृप तिनको कबहूँ नाहीं।।
मान गये तब पुत्र भये गंगा जु तिनहें जल धार बहाही।
सातवाँ सुत तब राख लियो नृप भीष्म पितामह लोग कहाहीं।।

४
संगम प्राकृत ही मानो, गंगा जमुना जिह नाम लिएं
नहि काऊ की गम तामें चले, ईश्वर निर्मित जान हिए।।
अक्षय बट गाथा विचित्र रही, देवन भावत बास किए।
जगतीतल प्रयाग कहें सबही, मरने पर फूल सिरा, तरिए।

५
वट वृक्ष कथा अति गूढ़ रही, प्रलय हरि लीला दरसाईं
मृकण्ड सुपुत्र मार्कण्डेय रहे, तिन दर्श भये गये चकराई।।
अक्षय वट नाम धरौ तबहि, नास नहीं इह रहें सदाही।
प्रमान दिए बहु मुशलिम शासन, पर आज तलक नहि सके नसाई।

६
तीरथराज प्रयाग कहें, त्रय आयुध आपने करन लिएं
चक्र गदा अरू फूल कमल, पाप हरत रंग काले भए।।
मगरा जु वाहन मिलो तिनको, सूधे निगले चरित्र ठये।
तेऊ पाप नसावन हित, चातुर मास वृन्दावन रये।।

७
माधव माधौ बन के रहे, संकर कामेश्वर बन तह छाए।
राम लखन सीता के सहित, जिनके दर्शन कर सुख पाए।।
सिधनाथ महावीर सरीखे, परसराम गोरख नाथ कहाये।
ललिता देवी तह राज रहीं, कुबेर और धर्म सुनके धाए।।

८
सत्य नारायण से नरसिंह, भैरव काल तहां दरसाये।
भारद्वाज अरू दत्तात्रेय, गरूण यम वेदव्यास कहाये।।
सूरज चन्द्र वरूण अरू इन्द्र, गणेश रहे जिन भारत गाये।

डरें नहीं काल सर्प योग से

छाया स्वरुप ग्रह राहु व केतु की परिधि ा के मध्य, बाकी के सातों ग्रह (जन्म उदित लग्न के समय के) के आ जाने के कारण 'कालसर्प योग' बनता है. आप जान लें कि कालसर्प तभी बनता है जब सूर्य आदि सभी ग्रह, राहु व केतु के मध्य आ जाएं. कालसर्प योग से डरना या डराना शास्त्रसंगत नहीं है, क्योंकि यदि कालसर्प दारूण कष्ट देता है तो, कभी व्यक्ति को देश संसार में उत्तम पद, धनसंपदा कीर्ति भी प्रदान करता है.

प्रथम व सप्तमक भाव के मध्य कालसर्प योग म्रें जन्मा व्यक्ति स्वतंत्र विचारों वाला, निडर होता है व आत्मसम्मान को सदा ऊपर रखता है. द्वादश छटे भाव में कालसर्प में जन्में व्यक्ति की आंखे अकसर कमजोर होती है, पढ़ाई आदि में अत्यधिक प्रयासों के बाद ही सफलता प्राप्त होती है.

योग ११ वें व पंचम भाव के मध्य बने संतानप्राप्ति में व उनसे कष्ट प्राप्त होते रहते है. दशम व चतुर्थ भावों में कालसर्प निर्मित हो तो जातक को उच्च शिक्षा प्राप्त करने में कठिनाई आती है किंतु अंत में उन्नति भी करता है.

नवम व तृतीय भाव में यदि शुभ दशा चले तो विदेश से लाभ भी होता है. अष्टम व द्वितीय भाव में कालसर्प योग हो तो मानसिक तनाव, असफलता, आर्थिक तंगी में घिरा रहता है. सप्तम व प्रथम भाव का कालसर्प योग, स्त्री/पति से क्लेश दिलवाता है. छठें व १२ वें भाव में कालसर्प योग हो तो व्यक्ति को संतानप्राप्ति में तो कठिनाई हो जाती है, लेकिन हो जाने के बाद कष्ट भी समाप्त हो जाते हैं. चतुर्थ व दसवें भाव का कालसर्प, पारिवारिक व माता से कष्टप्राप्ति का द्योतक होता है. तृतीय व ९वें भाव का कालसर्प व्यक्ति को विदेश में यात्राओं का लाभ देता है. द्वितीय व अष्टम भाव में पैतृक संपत्ति आदि मामलों में झगड़ें करवाता है.

सुधारः

यदि लग्न में बृहस्पति व शुक्र बैठें हो या राहु पर दृष्टि पड़ें तो कालसर्प योग कष्ट पैदा नहीं करता. यदि लग्न में सूर्य, चंद्र बलवान हों तो कष्ट कम प्राप्त होते है. चूंकि यह योग ग्रहजनित है, अतः इनका निदान भी किया जा सकता है.

विषहरि 'मां सनसादेवी' की विधिवत पूजा करें. पांच शनिवार, काले तिलों का तिलक लगाकर नारियल पर तेल मौली लपेटकर, अपने सर से तीन बार नारियल घुमाकर (भगवान शिव का ध्यान करते हुए या ऊं भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः तीन बार पढ़कर) चलते पानी में या गंगा में बहाए. घर के चौखट, मुख्यद्वार पर चांदी का स्वातिस्क चिन्ह बनवाकर लगाएं. घर में मोर पंख रखें व प्रातः उठकर व सोने से पूर्व, भगवान शिव व कृष्ण भगवान का ध्यान कर देखा करें.

मार्कण्डे अरू शेष रहे, इतै दर्शन जु गुफा मध पाये।।

९

योजन पॉच बताबत नग्र, बने पुल दोऊ सरित दर्शाहीं।
टेशन तीन बने यहीं पै, प्राग इलाहाबाद नैनी कहाहीं।।
किला जु बनाओ शाह अकबर, यमुना तट तहं स्नान कराहीं।
इंद्राजी नाम गई कर आपनो, आनंद भवन कौ दान यहॉहीं।।

१०

भारद्वाज को आश्रम बाग, चर्चा संत सुजान कराहीं।
अशोक स्तम्भ यहॉ दर्शे, घण्टाघर वरने जु यहॉहीं।।
चौक बाजार अरू खुसरो बाग, अजायबघर तहां बताहीं।
एकेडेमी बनी जु यहीं, विद्वानन हेतु विचित्र सुहाहीं।।

११

हिन्दी साहित्य सम्मेलन को, पुरूषोत्तम दास जी टण्डन थापौ।
ज्ञानवती जिन धर्मवती, आश्रम एक नवीन सु आपौ।।
हाईकोर्ट रहो न्यायालय, सोई बनो जिहँ धर्म को नापो।
ठेगें पर सब मार दिया, राम सुसेवक पत्र जो छापौ।।

१२

संगम सम्मुख ग्राम अरैल, जहॉं श्री बल्लभाचार्य रये।
चैतन्य महाप्रभु पहुँचे तहॉं, सम्बन्ध बने तिनके जो नये।।
कृष्णहु चन्द्र जी पहुँचे आए, श्रीहरिवंश के पुत्र रहे।
विद्वानन संघट संग सदा ही रहे, संस्कृत में जिन ग्रंथ कहे।।

१३

मत्स्य पुराण कथा वरणी, बारह अध्याय प्रयाग बताये।
श्री मार्कण्डेय सुनाय युधिष्ठिर, महात्तम प्रयाग राज कहाये।।
राजन की यह नीति रही, आप जहाँ जहँ जोय सुहाये।
अमला संगहि संग चले सब ऐसेहि, प्रयाग चहूँ दिशा छाए।।

१४

कुम्भ भरे प्रति बारह वर्ष, गुरू योग महिमा दरशावै।
संत महांत जुरै सिगरे, उत्सव एकहि मास रहावै।।
जहं तहं आय जुरैं जन सर्व, आनंद ही आनंद बरसावै।
प्रभुता प्रयाग कहें कहलों, अल्पजु बुद्धि अनंत कागावै।।

अनन्तराम गुप्त,ग्वालियर, म.प्र.

अक्षरगंधा त्रैमासिक
संपादकः डॉ. हरिकेश तरुण, साहित्यकार संसद, बहादुरपुर समस्तीपुर, बिहार-८४८१०१
शांति धमी
संपादकः श्री चन्द्रभानु आर्य, ७५६/३, आदर्श नगर, सुभाष चौक, जीन-१२६१०२, हरियाणा

पत्रिका का अर्द्धकुम्भ विशेषांक मिला. यह एक अनूठी पत्रिका है जो सामयिक विषयों के साथ साहित्यिकता भी बनाए हुए है. नये पुराने रचनाकारों से परिचय प्रदान कर यह हिन्दी के स्वरुप को समझाने में सहायक सिद्ध हो रही है. कहानी, कविताएँ सभी पसन्द आए.
सुरेश चन्द्र 'सर्वहारा' कोटा, राजस्थान

++++++++++++++++++++

पत्रिका को पढ़ने का सौभाग्य मिला. प्रेरक एवं अनेक ज्ञानबर्द्धक आलेख और मनमोहक कविताओं से भरपूर पत्रिका पठनीय है. हिन्दी की पत्रिका में ऑग्लभाषा के अंको का प्रयोग न करें. यह हिन्दी के साथ अन्याय है. मंगलकामनाओं के साथ
कृष्ण स्वरूप शर्मा ' मैथिलेन्द्र'
गीतांजलि-भवन, नर्मदापुरम्, म.प्र.

++++++++++++++++++++

विश्व स्नेह समाज, सार्थक पत्रिका प्राप्त हो रही है. आपका स्नेह, श्रम और स्वभाव भी स्मरण में सदैव जीवित जागृत है. आशा है सुखी, स्वस्थ एवं प्रसन्नचित्त होगें.
रामचन्द्र शुक्ल(पूर्व जज)
सम्पादक-साहित्यकार कल्याण परिषद, रायबरेली, उ.प्र.

++++++++++++++++++++

डॉ० राज के बारे में जानने का सौभाग्य मिला

पत्रिका का डॉ० राज विशेषांक प्राप्त हुआ. आभार. आदरणीय डॉ. बुद्धिराजा जी के बारे में बहुत सी जानकारियॉं मिली, करीब से जानने का सौभाग्य मिला. उनकी स्वास्थ्य कुशलता एवं दीघार्यु की मंगल कामना करता हूँ. आपका प्रयास सराहनीय है. पत्रिका की निरंतर प्रगति की मंगलकामनाओं सहित.**डॉ. सुनील गुप्ता 'तन्हा'**, पुष्पगंधा प्रकाशन, कवर्धा, छत्तीसगढ़.

++++++++++++++++++++

डॉ. बुद्धिराजा का अंक सम्मानजनक है

पत्रिका का डॉ. राज बुद्धिराजा के ७०वें जन्म दिवस पर विशेष अंक प्राप्त हुआ. डॉ. बुद्धिराजा के व्यक्तित्व एवं कृतित्व को यह अंक पूरे आदर एवं सम्मान के साथ प्रस्तुत करता है. साहित्यिक सृजनकर्ता का सम्मान वास्तव में पूरे साहित्यिक समाज का सम्मान है. आप भी पूरी निष्ठा एवं समर्पण से साहित्य वर्धन के क्षेत्र में अग्रसर है. आपका प्रयास सफल हो. इसी आशा के साथ. शुभकामनाओं सहित
हेमा उनियाल, लोधी कॉलोनी, नई दिल्ली

++++++++++++++++++++

डॉ० राज विशेषांक प्रेरणादायी है

पत्रिका का राज बुद्धिराजा विशेषांक प्राप्त हुआ. श्रेष्ठ साहित्यकार का समग्र विश्लेषणयुक्त यह विशेषांक बहुत ही प्रेरणादायी है. सुश्री बुद्धिराजा की साहित्य साधना, हिन्दी प्रेम एवं अन्य भाषाओं का सेतुबन्ध कार्य वास्तव में प्रशंसनीय है. उन्हें 'भारत रत्न' भी मिले. यह मेरी मंगल कामनाएं है.
श्रीनिवास के. पंचारिया, बागलकोट, कर्नाटक

++++++++++++++++++++

गागर में सागर है पत्रिका

आप द्वारा प्रेषित अंक प्राप्त हुआ. गागर में सागर के सदृश्य यह लघु पत्रिका आपके श्रेष्ठ संपादन में उत्तरोत्तर प्रगति करें. अपने समारोहों में, साहित्यिक आयोजनों में हमें भी याद कर लिया करें.**राजेश कुमार शर्मा,** भीलवाड़ा, राजस्थान

++++++++++++++++++++

आदरणीय भाई श्री गोकुलेश्वर द्विवेदी जी एवं पत्रिका परिवार को शत् शत् नमन्. भाई साः आपके द्वारा भेजी गई पत्रिका प्राप्त हुई. हमें खुशी हुई. परन्तु दुख यह रहा कि पत्रिका पुरानी भेजी गई यदि नई होती तो कितना आनन्द आता.

हम साहित्यकार तो कई गुना देकर विश्वास करते है. आपकी पत्रिका इसी प्रकार देश के साहित्यकारों का ध्यान रखेगी तो अवश्य ही उन्नति के शिखर पर पहुँचेगी. वशर्ते हम हर साहित्यकार और मामलों में गम्भीर रहें.
विनोद भटनागर, शिवपुरी, म.प्र.

++++++++++++++++++++

श्रेष्ठ अंक हेतु मेरी ओर से हार्दिक बधाई

पत्रिका का अप्रैल ०७ का अंक मिला. धन्यबाद. वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. राज बुद्धिराजा विशेषांक के रुप में यह अंक संग्रहणीय रहा.

हिन्दी सेवा को समर्पित डॉ. राज बुद्धिराजा को अभी तक भारत सरकार द्वारा पद्यमश्री तक से अलंकृत न करना दुर्भाग्यपूर्ण है. यह डॉ. राज बुद्धिराजा जी की उपेक्षा नहीं बल्कि राष्ट्रभाषा हिन्दी की उपेक्षा है. डॉ. राज को राष्ट्र स्तरीय सम्मान प्रदान करना भारत सरकार का नैतिक कर्तव्य है. आशा है शीघ्र ही भारत सरकार चेतेगी और डॉ. राज को राष्ट्र स्तरीय सम्मान प्रदान कर अपनी भूल का सुधार करेगी.

इस अंक के सभी लेख एक से बढ़कर एक है. इतने श्रेष्ठ अंक हेतु मेरी ओर से हार्दिक बधाई स्वीकार करें.
राजीव कुमार, बरेली, उ.प्र.

++++++++++++++++++++

पत्रिका का अंक प्राप्त हुआ. जिसमें आपने मेरा समाचार प्रकाशित किया है. समाचार प्रकाशन के लिए कोटिशः धन्यबाद.
डॉ. आई.ए.मंसुरी, संपादक, भाग्यदर्पण, खीरी, उ.प्र.

+++++++++++++++++++++
पत्रिका का अप्रैल ०७ का अंक प्राप्त हुआ. विशेषांक उत्तम बन पड़ा है. आपने डॉ. राजबुद्धिराजा पर जो सामग्री एकत्र कर प्रकाशित की है वह प्रशंसनीय है. **हरिचरण चरण वारिज**, कोटरा, भोपाल, म.प्र.

+++++++++++++++++++++
पत्रिका का पूराना अंक मिला.
नीति विरुद्ध करे जो भी काम,
उसका अपमान करें अपने,
देश पै अर्पण प्राण करें,
उनका हम नाम लगे जपने।
वीर जवान का साहस देख,
अधीर हृदय लगते कंपने,
बुद्धि-विवेक व साहस से,
परिपूर्ण सभी अपने सपने।
स्नेह में 'सनेही' मुक्त छन्द में निराला
'सुमन' नवीन जी का काव्य बड़ा प्यारा
रम्य 'ब्रजनन्दन सा सिरस समान सौम्य
द्वारिका प्रसाद औ प्रताप काव्य न्यारा है
अवधेश नूतन-अनूप का ना सानी कोई
रमईकाका ने खूब अवधी संवारा है
आशुकवियों की कमी यहॉ रही नहीं कभी
जगत में बेमिसाल मेरा बैसवारा है।

दुर्गा चरण मिश्र, कानपुर, उ.प्र.

+++++++++++++++++++++
मई ०७ का अंक मिला. इसमें आपने मेरे लेखन का सदुपयोग किया है. धन्यबाद एवं आभार. आपके सुखी, स्वस्थ एवं यशस्वी जीवन के लिए मंगल कामनाएॅं.

डॉ.महेशचन्द्र शर्मा,गाजियाबाद,उ.प्र.

+++++++++++++++++++++
१६ मार्च २००७ को आपके आयोजन में सम्मिलित होकर प्रसन्नता हुई. आपके व्यक्तित्व व लगन शीलता को देखने का अवसर मिला. इलाहाबाद रुपी साहित्य-संस्कृति व धर्म की नगरी में आपके संकल्प व चल रहे साहित्य समाज, असहाय, बेसहारा, पशुओं, विद्यार्थियों, साहित्यकारों व प्रेमियों सभी के लिए

शशांक मिश्र भारती, उत्तरांचल

+++++++++++++++++++++
आपकी पत्रिका के अवलोकन का अवसर अपने मित्र कवि से प्राप्त हुआ. आपकी पत्रिका की सामग्री रोचक, प्रभाव पूर्ण तो लगी ही साथ ही साहित्य के विभिन्न आयामों से समृद्ध प्रतीत हुई. आपके कुशल सम्पादन में उत्तरोत्तर प्रगति की मंगल कामनाओं के साथ कोटिशः धन्यबाद.**डॉ. रामवीर शर्मा** 'रवि', रामबाग, आगरा, उ.प्र.

देश बिकाऊ

डॉ० मोहन तिवारी 'आनंद',
सम्पादक, कर्मनिष्ठा, भोपाल

दैनिक समाचार पत्र में खबर पढ़कर मेरी बेटी ने कहा-"देखिये पापा आपने मेरे जन्म दिन पर उपहार देने को कहा था, तब मैंने आपसे कहा था जब जरूरत होती तब मांग लूंगी, आज वह दिन आ गया है."

"बोलो बेटी क्या चाहिए है आपको?"

"पापा देखिये आज के अख़बार में छपा है 'देश बिकाऊ है.'"

"मैने विज्ञापन पढ़ा. खबर सही थी. मैंने बेटी से बहाना बनाते हुए कहा-"बेटी क्या करोगी इसका, यह तो तुम्हारे किसी काम का नही है."

"नहीं पापा मुझे तो चाहिए ही है."

मैंने उसे समझाते हुए कहा-"बेटी यह देश तो बहुत छोटा है, इसमें तो मात्र दो सौ व्यक्ति ही रह सकते है. इतने छोटे से देश को लेकर क्या करोगी?"

"इसीलिए तो पापा, मैं इस भीड़ भरे देश से ऊब चुकी हूॅं. कितने गंदे लोग रहते हैं यहां, जो मासूम बच्चो की हत्या करते है, उनका मांस खा जाते है, उनके अंग बेचते है, उनके साथ. ... पापा मैं उस छोटे से देश में आप, मम्मीजी, अपनी क्लास टीचर तथा अपनी सहेलियों के साथ रहूंगी. किन्तु हॉ, किसी बहशी दरिन्दे को अपने देश में घुसने नहीं दूंगी, क्योंकि वह मेरा देश होगा, मेरा अच्छा देश."

"मैं उसकी बातें सुनकर मौन रह गया."

भाषण

संजय कुमार चतुर्वेदी 'प्रदीप'
लखीमपुरखीरी, उ.प्र.

प्रतिष्ठित दहेज विरोधी संस्था के अध यक्ष ने जोरदार दहेज विरोधी भाषण दिया सबने उनकी खूब सराहना की. कुछ दिन बाद मैं अपनी बेटी की शादी का प्रस्ताव लेकर उनके यहां गया, तो उन्होंने कहा चार पहिया वाहन के साथ कैश कितना दे पाओगें.

तो मैं चौका. कहा आप भी मजाक करते है. आप तो दहेज विरोधी संस्था के अध्यक्ष है, उस दिन मैंने भी आपका भाषण सुना था. सब बहुत ही प्रशंसा कर रहे थे.

तो उन्होंने कहा कि वह हमारी प्रोफेशनल लाइफ थी, यह हमारी पर्सनल लाइफ है, भाषण देने के लिए होता है या पालन करने के लिए. मैं चुपचाप चला गया.

हिन्दी पुत्र को काव्य कुसुम

अखिल भारतीय साहित्य संगम, उदयपुर, राजस्थान द्वारा बरेली निवासी श्री राजीव कुमार हिन्दी पुत्र को राष्ट्रीय प्रतिभा सम्मान-०७ के अन्तर्गत उनकी प्रविष्टि के अधार पर मानद उपाधि 'काव्य कुसुम' से अलंकृत किया गया. श्री राजीव कुमार इससे पहले भी सम्मान मिल चुके है.

शुभ विचार
संपादकः श्री प्रदीप नाहटा
६३ए, नाहटा निवाससूरज नगर, उज्जैन-४५६००६

तम की धार पर डोलती धरती की नौका

डॉ. तारा सिंह का नवीन कविता संग्रह "तम की धार पर डोलती धरती की नौका" में कविताओं में जहॉ आध यात्मिकता के दर्शन होते हैं तो वहीं उनमें सामाजिक विद्रूपताओं के विरूद्ध आक्रोश के स्वर भी प्रति ध्वनित होते है. कवयित्रि ने 'अपनी बात' में सपाट भाषा में कहा है "इसमें प्रेम से उत्पन्न निराशा, बेवफाई की वेदना, वियोग की तड़प, आदि के अलावा नियति की निर्मम मार, लोक मंगल की भावना आदि पर मैंने यथासंभव विस्तार से अपने विचार को आप तक पहुँचाने की कोशिश की है."

तीस कविताओं से सम्पन्न यह संग्रह अपनी भावुक भाषा में अनेक प्रश्नों के उत्तर दे रहा है. कविता संग्रह में कवयित्रि के अनेक रूपों के दर्शन होते है. एक रूप साकी बाला के रूप में बनकर स्वंय साकी बनने को तैयार हूँ. यद्यपित आगे चलकर वही मदिरा विष के रूप में छलकती दिखाई देती है. पौषमास की शीतल पूर्णिमा में छलकी उस मदिरा को विष समझकर भी वह जब तक तन में प्राण है, तब तक साकी बनने को उद्यत है.

कवयित्री ने परमात्मा से पूछा है कि किस पन्थ से होकर तुम्हारे पास पहुँचना आसान है. क्योंकि उसका मानना है कि जब जागने का समय था तब वह सप्तावस्था में ही रही और बारिश, ऑधी आकर मेरे अस्तित्व को उड़ा ले गई. उसे उस पार जाना था मगर वह इस पार ही किनारे पर खड़ी रह गई.

डॉ० तारा सिंह ने वर्तमान समय में काश्मीर का जो चित्रण 'आज का काश्मीर' में किया है उसके लिये उन्हें बधाई देने का मन करता है. दुनिया का स्वर्ग कहलाने वाले काश्मीर आज मनुष्यत्व से वंचित है. वहॉ आतंक का भय पसरा है और अनैतिक अत्याचारों से चारों ओर सन्नाटा है. घाटी की निरीह आत्मा चीत्कार कर रही है जहॉ मानवता पर अमानुष व्यवहार का दौर चल रहा है.

राजनीति और अर्थनीति के स्वार्थमय कन्दर्प में "संस्कृति और सम्प्रदाय" में स्पष्ट हुआ है. कवयित्री के शब्दों में आज की संस्कृति अमीरों के पेट भरने का साधन बन गई है. कवयित्री प्रश्न करती है कि प्रिये तुमसे किसने कहा कि जो पुरूष रमणी को अपने आलिंगन में बॉध चुका है वह देश काल के आगे बौना है. जबकि उस मनुष्य का लक्ष्य ईश्वर तक पहुँचने का है. वह आगे स्वीकार करती है कि अतीत स्वर्णिम होता है. अतीत के गीतों को सुनकर मन में फिर से नवीन वर्तमान के दर्शनों की उत्कट अभिलाषा जागने लगी है. ऐसे में यदि मनुष्य यह स्वीकार कर ले कि स्वर्ग धरती से श्रेष्ठ होता है तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी.

डॉ. तारा सिंह ने काल के अश्वस्थ की गति पर टिप्पणी करते हुए कहा कि यह धरा, घृणा और द्वेष से कभी खाली नहीं होगी. वह तो एक आकाश की छत के नीचे सुख और शान्ति के अन्वेषण में निरन्तर लगा हुआ है. यही कारण है कि संग्रह की अन्तिम कविता में अपनी कविताओं के विषय में लोगों की प्रतिक्रिया को व्यक्त करती हुई कहती है कि इन कृतियों में मेरा जीवन इतिहास नहीं अपितु इनमें मेरी प्राणों की कथायें है.वर्षो से कवयित्री के मानस पटल पर जमी बर्फ की चट्टान जिसमें पीड़ा और लाचारी जमी पड़ी थी, शब्द बनकर पिघल रहे हैं और यही मेरी कविताओं की भूमिका है. इस कविता संग्रह की प्रत्येक कविता 'तम की धार डोलती जगती की नौका के समान, निरन्तर प्रवाहमान है. यही इसका सार्थक नामकरण है. इति

समीक्षकः कृष्ण मित्र

कवयित्रीः डॉ. तारा सिंह

विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद द्वारा प्रकाशित पुस्तकें

1. मधुशाला की मधुबाला	:	लेखक : राजेश कुमार सिंह	मूल्य 10.00
2. अपराध	:	लेखक : राजेश कुमार सिंह	मूल्य :10.00
3. सुप्रभात	:	दस रचनाकारों का संग्रह	मूल्यः 10.00
4. निषाद उन्नत संदेश	:	लेखकःचौ0 परशुराम निषाद,	मूल्यः 10.00
5. अदभुत व्यक्तित्व	:	लेखकः गोकलेश्वर कुमार द्विवेदी	मूल्यः 10.00

पुस्तकों के लिए भेजें/लिखेंः मनीआर्डर/डी.डी.

सचिव, विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान, एल.आई.जी–93, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद

प्रस्तावित

स्नेहाश्रम

आपसे सहयोग की अपील करता है

१.स्नेहालय (अनाथाश्रम एवं वृद्धाश्रम): समाज में तिरस्कृत वृद्धजनों व असहाय बच्चों के रहने खाने, अध्ययन, अध्यापन की सम्पूर्ण व्यवस्था से परिपूर्ण

२.हिन्दी महाविद्यालयः यह संस्थान अध्यनरत छात्र/छात्राओं को अति आधुनिक पद्धति से शिक्षित करेगा. साथ ही यह पूर्ण प्रयास करेगा कि छात्रों को रोजगार मिल सके.

३.चिकित्सालयः १०० बिस्तर का अत्याधुनिक उपकरणों से परिपूर्ण आयुर्वेद/एलोपैथ/योग से चिकित्सा की जायेगी जिसमें गरीबों का निःशुल्क इलाज किया जाएगा.

४.पुस्तकालयः २०० लोगों के अध्ययन करने की सुविधा से परिपूर्ण ऐसा पुस्तकालय होगा जिसमें विश्व के लगभग सभी बड़े लेखकों की पुस्तकें उपलब्ध होगी, साथ ही पाठ्य पुस्तकें भी उपलब्ध होगी.

५.प्रकाशनः इसमें धार्मिक, सामाजिक, साहित्यिक व सभी प्रकार के प्रकाशन की सम्पूर्ण व्यवस्था होगी.६६

६.गौशालाः इसमें लगभग दस हजार गायों को रखने की व्यवस्था होगी. साथ ही गौमाता के त्याज्य सामग्री को औषधीय उपयोग में लाने हेतु शोध/अनुसंधान की भी व्यवस्था होगी.

नोटः

१. जो भी व्यक्ति/संस्था १० लाख या इससे ऊपर का सहयोग जिस मद में देगी उसके नाम पर उसका नाम रक्खा जाएगा.

२. १ लाख तक का सहयोग देने वाले व्यक्ति के नाम पर कमरे का नाम, पुस्तकालय में ५ लाख देने पर पुस्तकालय का नाम उसके नाम पर कर दिया जायेगा.

३. आप सहयोग सीमेन्ट, बालू, ईट, छड़ व अन्य उपयोग की सामग्री देकर भी कर सकते हैं.

४. इन संस्थाओं को संचालन एक कमेटी के तहत किया जाएगा.

५. जन से, जन द्वारा, जन के लिए

सहयोग के लिए लिखें या मिलेंः सचिव, विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान/
सचिव, जी.पी.एफ. सोसायटी
एल.आई.जी-१४४/६३, सेक्टर-२, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद

email: gpfsociety@rediffmail.com,sahityaseva@rediffmail.com

डाक पंजीयन संख्याः एडी.306/2006–08 R.N.I.N0.-UPHIN2001/8380

साहित्य श्री सम्मान ०७ हेतु प्रविष्टिया आमंत्रित

विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद द्वारा २००३ से लगातार साहित्यकारों/पत्रकारों/समाजसेवियों को पुरस्कार प्रदान किये जा रहे हैं. इस वर्ष पांचवे साहित्य मेला के अवसर पर पुरस्कारों की संख्या में वृद्धि करते हुए कुल २५ पुरस्कार देने का निर्णय लिया गया है.

१. **साहित्य श्री सम्मानः**(रु०५००१/-) एक कहॉनी तीन प्रतियों में.

२. **डॉ.रामकुमार वर्मा सम्मानः** (रु०२५००/-) एक नाटक तीन प्रतियों में

३. **बाल श्री सम्मानः**(रु०११००/-) एक बाल कहॉनी तीन प्रतियों में

४. **कैलाश गौतम सम्मानः** कोई एक हास्य/व्यंग्य कविता तीन प्रतियों में

५. **डॉ. किशोरी लाल सम्मानः** श्रृंगार रस पर आधारित एक रचना तीन प्रतियों में

६. **राजभाषा सम्मानः** यह सम्मान सरकारी/अर्द्धसरकारी विभागों/उपक्रमों में कार्यरत राजभाषा अधिकारियों को राजभाषा के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए दिए जाएगें.

७. **समाज श्रीः** गत ५ वर्षो के सामाजिक कार्यो का सम्पूर्ण लेखा-जोखा तीन प्रतियों में

८. **सम्पादक श्रीः** पत्रिका के कोई तीन अंक तीन प्रतियों में

९.**युवा पत्रकारिता सम्मानः** पत्रकारिता के क्षेत्र में किए गये कार्यो का सम्पूर्ण विवरण तीन प्रतियों में

१०.राष्ट्रभाषा सम्मानः यह अहिन्दी भाषी क्षेत्र के किसी विद्वान द्वारा हिंदी के उत्थान के लिए किए गए कार्य के लिए दिया जाएगा. सम्पूर्ण जानकारी सहित लिखें.

१० मानद उपाधियांः सम्पूर्ण साहित्यिक उपलब्धियों का लेखा जोखा तीन प्रतियों में

११. विश्व हिंदी साहित्य सेवा अंलकरणः लेख/संस्मरण/व्यंग्य/नाटक/उपन्यास तीन प्रतियों में

साहित्य जगत में अत्यधिक लोकप्रिय, विश्वसनीय एवं राष्ट्रीय स्तर पर चर्चित पुरस्कारों हेतु चयन एक निर्णायक मण्डल द्वारा किया जायेगा. उनका निर्णय अंतिम तथा मान्य होगा. पुरस्कार हेतु प्राप्त पुस्तकें, पत्रिकाएं लौटायी नहीं जाएगी. पुस्तकों के किसी भी पृष्ठ पर पेन से कोई शब्द न लिखें. ये पुरस्कार इलाहाबाद में आयोजित एक गरिमापूर्ण साहित्यिक समारोह में *फरवरी २००८* में प्रदान किये जायेंगे.

विशेषः १. अपनी रचनाओं पर अपना नाम/पता न लिखें। मौलिकता के लिए केवल हस्ताक्षर करें।

२. सभी प्रविष्टियों के साथ एक पोस्ट कार्ड/एक टिकट लगा जवाबी लिफाफा भेजें।

३. प्रविष्टि के साथ १००/-रुपयें का धनादेश भेजना अनिवार्य होगा. धनादेश/बैक ड्राफ्ट सचिव के नाम से ही भेजें. चेक स्वीकार्य नहीं होगें.

४. प्रविष्ट्रियों के साथ सचित्र स्वविवरणीका अवश्य भेजें.

अंतिम तिथिः ३० नवम्बर २००७

लिखेंः गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

सचिव, विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान,

एल.आई.जी-६३, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी द्वारा भार्गव प्रेस बाई बाग से मुद्रित कराकर एल.आई.जी–93, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा,इलाहाबाद से प्रकाशित किया. आर.आई.आई यूपीहिन्दी2001/8380 डाकपंजी.सं0ः एडी.306/2006–08 **संपादकः** गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी